RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 3 अंक 11 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका
सितम्बर 2020

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद

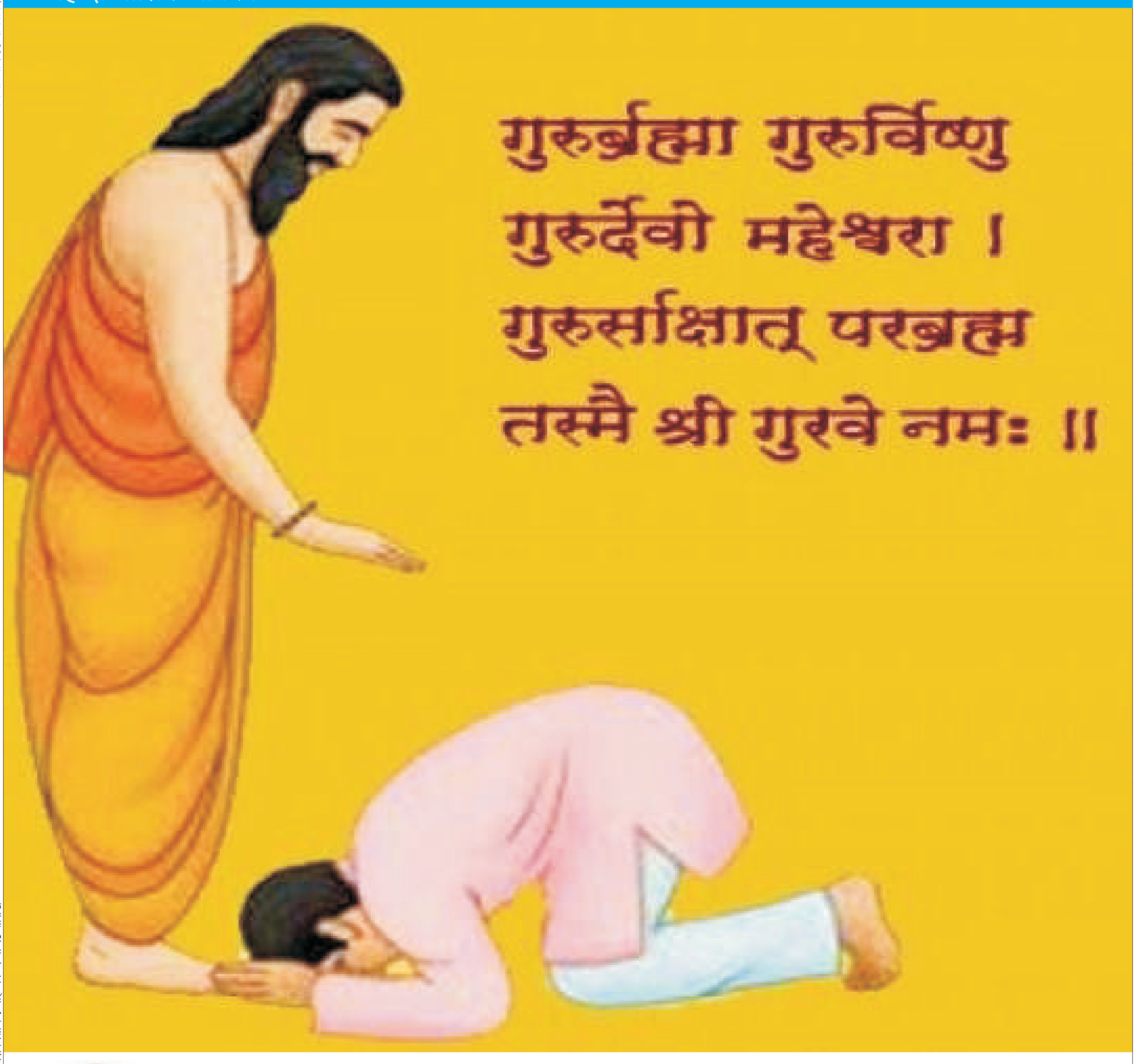

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

ताजा खबरों से

अपडेट रहने के लिए

करें

YouTube

Jaivardhan News

जयवर्द्धन NEWS

शक्ति स्पोर्ट्स के पास, शास्त्री मार्केट, कांकरोली

मो. 96729-80901, 94142-39648

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स**, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

सम्पादकीय

शिक्षक एक जौहरी

भारत की आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में उन्नयन हेतु अच्छी- अच्छी सरणियों और सिफारिशों वाले दसाधिक शिक्षा आयोग और शिक्षा समितियों का निर्माण किया गया, पर हकीकत के ऊंट ने करवट कहां तक बदली है। शिक्षा का उद्देश्य बहुत गहन और गंभीर है। 'सा विद्याया विमुक्तये' तथा 'विद्या विदण्डेमृतम्' के सूक्ति वाक्य शिक्षा के संदर्भ में भारतीय शिक्षा दर्शन को प्रकट करते हैं। बालक का चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का परम ध्येय है। शिक्षक एक जौहरी की भांति विद्यार्थी रूपी हीरों को तराशता है।

शिक्षक राष्ट्र निर्माता है। मां प्रथम गुरु है, जो बालक को संस्कारवान बनाती है। बालकों के भविष्य को उत्तम ढ़ंग से निखारने हेतु सच्चे अर्थों में विद्यालयों में सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है। विश्व विश्रुत भारतीय संस्कृति में गुरु का गौरव गान ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में करके साक्षात् परम् ब्रह्म माना है। वैश्वीकरण और भौतिकवादी बाजारवाद की फलती- फूलती नव संस्कृति में शिक्षक की भूमिका अधिक बढ़ गई है।

शिक्षा का मूल मंतव्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान समय में स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा के साथ- साथ आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करना शिक्षक के लिए चुनौती है। जनसंख्या विस्फोट के साथ ही तकनीकी एवं ज्ञान का विस्फोट भी बहुत हुआ है। समकालीन परिस्थितियों में समन्वय और सामरस्य भाव पैदा करने में शिक्षक की महत्ती भूमिका है। भारतीय समाज में शिक्षक आज भी पूजनीय और वंदनीय है। शिक्षक सम्मान की भावना को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु शिक्षक को एक कर्मयोगी के रूप में अपने को प्रस्तुत कर विद्यार्थियों के उत्तम चरित्र का निर्माण कर राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में अपनी समिधा देनी होगी।

नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'
शिक्षाविद्- साहित्यकार, नाथद्वारा
मो. 98299-60055

इस अंक में खास...

1.	**कवर स्टोरी 1 :** गिरती शैक्षिक गुणवत्ता चिंतनीय	पेज- 4
2.	**कवर स्टोरी 2 :** सख्त नियम, फिर खामी कहां ?	पेज - 5
3.	**ऐतिहासिक धरोहर :** राजप्रशस्ति महाकाव्य	पेज- 10
4.	**व्यंग्य :** नेताजी की प्रेस कांफ्रेंस	पेज- 12
5.	**राइजिंग अवेयरनेस :** स्पीरीचुल प्रेक्टिस	पेज - 14
6.	**लघु कथा :** किराए का मकान	पेज - 15
7.	**तीखी मिर्ची :**	पेज - 16
8.	**मेरा गांव मेरे लोग :** मन्नासिंह दायजी	पेज - 18
9.	**राजस्थानी केणावतां**	पेज - 20
10.	**गुमनाम शख्सियत :** दिल का राजा रमेश सेन	पेज - 24
11.	**स्टार ऑफ राजसमंद :** तनसुख व नरेंद्र बोहरा, केलवा	पेज - 25
12.	**कविताएं :** (1) ढाई अक्षर (2) स्वदेशी अपनाएंगें	पेज - 26
13.	**व्यंग्य :** दुष्टों को न दें आश्रय- प्रश्रय	पेज- 28
14.	**व्यंग्य :** तालाब लाते समय पुल का टूट जाना	पेज - 29
15.	**टेक्नीकल विंडो :** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	पेज - 32
16.	**मेवाड़ी चौपाल :** राबड़ी	पेज - 34

कवर स्टोरी

शिक्षकों के साथ बढ़ी सुविधाएं, मगर शैक्षिक गुणवत्ता में गिरावट

आज के शिक्षक को डॉ.राधाकृष्णन के आदर्शों पर चलने की जरूरत

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन प्रकांड विद्वान व दार्शनिक थे। उन्होंने दर्शनशास्त्र में एमए की उपाधि ली और सन् 1916 में मद्रास रेजिडेंसी कॉलेज में दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। 1952 में डॉ. राधाकृष्णन भारत के उपराष्ट्रपति बने और 13 मई 1962 को दूसरे राष्ट्रपति बने, मगर जीवनभर स्वयं को वे एक शिक्षक ही मानते रहे। एक बार डॉ. राधाकृष्णन के मित्रों ने गुजारिश की कि वो उन्हें उनका जन्मदिवस मनाने की इजाजत दें। डॉ. राधाकृष्णन का मानना था कि देश का भविष्य बच्चों के हाथों में है और उन्हें बेहतर इंसान बनाने में शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि उन्हें प्रसन्नता होगी, अगर उनके जन्मदिन को शिक्षकों को याद करते हुए मनाया जाए। इसके बाद 1962 से हर साल 5 सितम्बर को उनके जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इन्हें प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न भी प्रदान किया।

Dr. Sarvepalli Radhakrishnan
September 5, 1888 - April 17, 1975

एक बालक के भविष्य को सुधारने में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक के सानिध्य में रहकर ही बालक अपने अन्तर्निहित सद्गुणों का विकास कर सकता है। ढ़ांचागत शिक्षा सुविधा एवं शैक्षिक गुणवत्ता को सुधारने के लिए समय- समय पर सरकार द्वारा काफी बदलाव किए जाते रहे हैं। काफी बदलाव के बाद भी वर्तमान शिक्षा पद्धति में कौशल विकास, मानवीय मूल्यों का विकास कर नैतिक शिक्षा का पूर्णतया अभाव देखा जा रहा है। निजी व सरकारी विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था में भी बड़ा फर्क देखा गया है, जिसमें एक तरफ निजी स्कूलों में योग्य शिक्षित फैकल्टी का अभाव है, मगर मजबूत प्रबंधन के चलते बेहतर परिणाम दे रहे हैं। दूसरी तरफ सरकारी स्कूलों में पूर्ण योग्यता वाले शिक्षक होने के बाद भी कमजोर प्रबंधन के चलते बेहतरीन परिणाम नहीं दे पा रहे हैं।

शिक्षक की भूमिका

वर्तमान में कई शिक्षक अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर एक माली की तरह स्कूल समय के बाद अपने छात्रों को पढ़ाकर उन्हें योग्य बना रहे हैं। वे शिक्षक को बतौर नौकरी नहीं, बल्कि शैक्षिक उन्नयन के जुनून के साथ देश के भविष्य निर्माण में जुटे हुए हैं। सामान्यतया यह देखा गया है कि एक छात्र शिक्षक बनने के लिए अपने शैक्षिक व सामान्य ज्ञान के लिए कई किताबें पढ़ता है, मगर शिक्षक बन जाने के बाद अपनी किताबें बंद कर देता है। कई शिक्षक समयानुकूल अपनी योग्यता में विकास नहीं कर पाए, जिसका खमियाजा छात्रों को भुगतना पड़ता है।

कौशल विकास का अभाव

सामान्यतया जो छात्र दसवीं या बारहवीं तक ही पढ़ते हैं, वे अर्जित शिक्षा के आधार पर रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते हैं। क्योंकि बारहवीं तक की पढ़ाई में कौशल विकास ही नहीं हो पाता है। प्रारंभिक शिक्षा में ही रोजगारपरक शिक्षा का समावेश होना चाहिए, जिससे सामान्य शिक्षित छात्र भी अपने हुनर को निखार कर अपनी आय का स्त्रोत विकसित कर सकता है।

नैतिक शिक्षा का अभाव

सनातन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के दौरान शिक्षकों द्वारा मानवीय मूल्यों व अध्यात्मिक विकास जोर दिया जाता था, मगर वर्तमान में शिक्षक सिर्फ किताबी ज्ञान दे रहे हैं, जिससे छात्र पढ़ाकू बनकर रह गए हैं। यही वजह है कि भावी पीढ़ी में नीतिपूर्ण ज्ञान का अभाव देखा जा रहा है। वर्तमान शिक्षा में परीक्षा प्रणाली के कारण प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा मिल रहा है। नीति ज्ञान की कमी के कारण छात्र गलत तरीके अपना कर भी परीक्षा पास करने में लगा रहता है। ऐसे में स्कूली परीक्षा तो वह छात्र पास कर लेता है, मगर जीवन जीने की परीक्षा में वह फेल हो रहा है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आवश्यक

लक्ष्मणसिंह राठौड़
सब चीफ एडिटर जयवर्द्धन
मो. 96729-80901

कहते हैं जिस तरह बिन पानी सब सून। ठीक वैसे ही शिक्षा के बिना जीवन जीना ही मुश्किल है। ऐसी स्थिति में शैक्षिक स्थिति की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वैसे शिक्षा का शाब्दिक अर्थ सीखना भी है और सीखने की कोई उम्र निर्धारित नहीं है, लेकिन इसके लिए प्राथमिक विद्यालयी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जरूरी है। फिर हर व्यक्ति के हर पड़ाव पर नई-नई चीजें देखने, सुनने को मिलती है, जिससे उन्हें नया सीखने का मौका भी मिलता है। प्राचीन काल में गुरुकुल होते थे, जहां गुरु कहानी या किसी घटना के बारे में बताते हुए शिक्षा प्रदान करते थे। शुल्क के रूप में आश्रम के विद्यार्थी वहां की साफ सफाई किया करते थे। बदलते समय के साथ गुरुकुल स्कूलों में तब्दील हो गए। श्यामपट और चूने (चॉक) का प्रयोग आरम्भ हुआ। पुस्तक व उत्तरपुस्तिकाओं से पढ़ाई होने लगी और शिक्षा शुल्क अब नकद लिया जाने लगा। शिक्षा के लिए हिंदी या अंग्रेजी माध्यम की रूपरेखा तैयार हुई। अब श्यामपट्ट की जगह ब्लैक या व्हाइट बोर्ड ने ले ली है, जबकि चॉक की जगह मार्कर इस्तेमाल होने लगे हैं।

अब तो आधुनिक शिक्षा में डिजिटल क्लासेज शुरू हो गई, जिसमें कम्प्यूटर व प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाया जाने लगा है। इस तरह कई बदलाव हुए, मगर शैक्षिक गुणवत्ता की स्थिति देखी जाए, तो कई बदलाव के बाद भी गुणवत्ता में सुधार नहीं हो पाया। पहले शिक्षा एक वर्ग विशेष क्षत्रिय व ब्राह्मण के लिए हुआ करती थी, लेकिन आज कोई भेदभाव नहीं है। पहले स्त्रियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी, मगर आज पुरुषों के बराबर महिलाओं के लिए शिक्षा की सुविधा है। इस तरह कई आमूलचुल बदलाव होने के बावजूद शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार नहीं होना चिंताजनक है। शिक्षा विभाग द्वारा कराया जाने वाला शैक्षिक गुणवत्ता मूल्यांकन के अनुसार 5वीं, 8वीं व 10वीं के कई छात्रों को न हिन्दी में लिखना आता है और न ही पढ़ना। हालत यह है कि 20 फीसदी से भी ज्यादा ऐसे छात्र है, जो पढ़कर भी अनपढ़ है। इससे पूरी शैक्षिक व्यवस्था पर ही सवाल उठने लगे हैं कि आखिर जब छात्र को पढ़ना लिखना ही नहीं आ रहा है, तो वह आठवीं कक्षा तक कैसे पहुंच गया। ऐसे ज्यादातर छात्र 9वीं कक्षा में फेल भी हो रहे हैं, जिसका प्रत्यक्ष शैक्षिक रिकॉर्ड भी है।

पहले स्कूल की सफाई भी नियमित दिनचर्या में था। स्कूल के प्रति अपनापन व सम्मान उतना ही था जितना कि अध्यापको के प्रति। यह वो दौर था जब बहुसंख्यक अभिभावक अपने बच्चों को सरकारी स्कूल पढ़ने भेजते थे। अब ऐसी कौनसी परिस्थितियां आ गई कि कई छात्र आज आठवीं उत्तीर्ण होकर भी अनपढ़ के समान ही है, जिन्हें सामान्य हिन्दी पढ़ना व लिखना भी नहीं आता। पहले पढ़ाई के साथ उनमें उच्च मानवीय मूल्यों का विकास करने पर जोर दिया था ताकि वे बेहतर इंसान और समाजोपयोगी नागरिक बन सकें, लेकिन वर्तमान में शैक्षिक स्थिति देखी जाए, तो रटंत विद्या ज्यादा बढ़ गई है।

ऐसे में आज की शिक्षा पुस्तकीय बनकर रह गई है, जिससे मानवीय मूल्यों का उत्थान नहीं हो पा रहा है। शिक्षा की प्रणाली रोजगारपरक न होने के कारण यह आज बेरोजगारों की फौज खड़ी कर रही है। निजी स्कूलों की शिक्षा को आज बेहतर माना जाता है, मगर वहां भी सरकारी की तरह ही मानवीय मूल्यों के साथ नैतिक शिक्षा का अभाव है। निजी स्कूलों के ज्यादातर छात्रों को किताब पढ़ना आता है, मगर रटने के ज्यादा आदी है। रोजगारपरक शिक्षा का अभाव है, जिससे विद्यालयी शिक्षा के बाद छात्र अपने हुनर का विकास नहीं कर पाता और न ही रोजगार पा सकता है।

दृष्टिकोण में परिवर्तन का पुरोधा : आज का शिक्षक

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
मो. 94602-52308

इन पंक्तियों के लेखक के लिए शिक्षक दिवस आत्मावलोकन का पर्व है। उन शक्तियों को स्मरण करने का पर्व है, जिन्हें मैं अपने तथाकथित ज्ञान गर्व के कारण विस्मृत कर गया हूं, उन कमजोरियों पर ध्यान रखने का अवसर है, जिन्हें मैं अपनी उदार प्रकृति मान बैठा हूं और मेरे अंदर गहराई में दुबकी उन संभावनाओं को बाहर लाने का पल है, जिन्हें आलस्यवश मैं उजागर नहीं करना चाहता।

शिक्षक दिवस शिक्षक होने के गौरव की तपन को जागृत करने का दिन है। शिक्षा जैसे सेवा कार्य के बहुत लंबे युगों की परंपरा इस गौरव की तपन को शिक्षकों के मन मस्तिष्क में प्रेरणा का स्रोत बन जलाए रखने में सक्षम है। मुश्किल यह है कि हम परंपराओं की सुगंध से सुवासित होने का अब प्रयास नहीं करते। ऋषिकुल की वेद कालीन गुरु शिष्य परंपरा से लेकर कात्यायन, पतंजलि और पाणिनी जैसे विद्यादानियों की देन से होते हुए रामायण और महाभारत कालीन गुरुकुलों से निकले राम और कृष्ण जैसे शिष्यों के निर्माता वशिष्ठ और संदीपन जैसे गुरुओं के युग की प्रेरणाओं का बहुत बड़ा संसार आज के शिक्षकों के सामने है। आदर्श गुरु शिष्यों की प्रेरणादायी फेहरिस्त का इतिहास तो सूर, तुलसी, मीरां जैसे शिष्य और वल्लभाचार्य, रामानंद और जीव गोस्वामी जैसे संत हृदय नवनीत समाना... गुरुजन तक फैला हुआ है। आज के शिष्यों के लिये प्रेरणाओं का स्रोत बन बिखरी यह विरासत कितनी विशाल है, इसका अंदाज नहीं लगाया जा सकता।

शिक्षक दिवस उन प्राचीन परंपराओं के ऊर्जा पुंजों से अपने लिये बहुत कम ही सही पर, छोटी छोटी चिंगारियों को खोज निकालने का पर्व है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आजादी के बाद शिक्षा के बदलते परिदृश्य में शिक्षकों के लिये ऐसे अनेक संविधान के अंतर्गत अवसर उपलब्ध हुए जब चौदह वर्ष तक के बच्चों के लिये नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा सहित कमजोर, वंचित वर्ग के बच्चों के लिये पढ़ने लिखने के प्रावधान किये गये। धर्म, जाति, लिंग भेद से ऊपर सभी वर्ग के बच्चों के लिये शिक्षा मुहैय्या कराकर शिक्षकों के लिये इस सेक्टर में नये अवसरों के लिये अनेक आयाम सामने आये। फलस्वरूप शिक्षा सेवा, समर्पण सेवा और अर्थोपार्जन के प्रतिष्ठित क्षेत्र के रूप में स्थापित हुई। आजादी के बाद के वे वर्ष जब शिक्षा आयोग शिक्षा के तौर तरीकों पर 'झीनी बीनी चदरिया' बुनने का काम कर रहे थे। शिक्षक की प्रतिष्ठा गांव, मजरों, ढाणियों के अभिभावकों के दिलों में उनके लिये दुआओं के स्वर संधान कर रही थी।

शिक्षकों की योग्यता, कौशल और ज्ञानोपयोग की कसौटी के व्यापक क्षेत्र आजादी के बाद से लेकर अपनी चादर फैलाते रहे। प्रारंभिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालय, अध्यापक व तकनीकी शिक्षा सहित भारतीय प्रबंध और प्रौद्योगिकी संस्थानों ने शिक्षकों को अवसरों की दृष्टि से जितना बड़ा क्षेत्र दिया, उतना शायद और किसी सेक्टर में नहीं। मुझे विश्वास है कि शिक्षक वर्ग के लिये बदलाव की बयार बहाने की अकूत संभावनाएं इस कार्य क्षेत्र में रहीं। कहा भी गया है, शिक्षा जगत् 'प्रतिमानों में परिवर्तन' की कार्यशाला है। विजन, मिशन, सीखने सिखाने के नित नये संप्रयोग, प्रशिक्षण से परिष्कार, अनुसंधान, स्वाध्याय, शैक्षिक नेतृत्व और सृजनात्मकता के रास्ते बढ़कर सृजनशील शिक्षकों ने बच्चों और बड़ों के दिलों पर राज किया है।

उक्त सभी बातें किसी प्रमाण की अपेक्षा नहीं रखतीं। अब भी शिक्षक, स्कूल, कॉलेज, प्रिंसीपल हमारी जीवन यात्रा के सहयात्री बन हमें कभी हंसाते हैं, कभी रुलाते हैं, कभी भावुक बनाते हैं तो

कभी स्मृतियों की लकीरों में सुनहरे रंग भरते हैं। हमें जिन शिक्षकों ने पढ़ाया, हमारी मार्गदर्शक परंपराओं का हिस्सा हैं।

यह तस्वीर का एक पहलू है, लेकिन दूसरा पहलू इस दृष्टि से चिंता का विषय है कि जिस कार्य में अपनी सृजनात्मकता और नेतृत्वशीलता को सामने लाने की व्यापक संभावनाएं हैं, स्वायत्तता है और सम्पूर्ण समाज व विद्यार्थियों द्वारा विनम्रता के साथ शिक्षक के अच्छे कार्य को शिरोधार्य करने की स्थितियां हैं, वहां उनकी ऊर्जावानता उनके हाथों से फिसल कर राजनीति और ब्यूरोक्रेसी के हाथों में चली जाये और शिक्षक कर्म पिटी पिटायी, घंटियों और बंधे बंधे बंधाये पाठ्यक्रम की पूर्ति तक सीमित हो जाये, यह विचारणीय है। ऐसा होने के पीछे स्पष्ट कारण भी हैं। विगत पांच दशकों में शिक्षा व्यवस्था में नवचिंतन की क्रांति का प्रवाह रहा, लेकिन शिक्षकों तक उस नवचिंतन से उत्पन्न 'संवेदनशील शिक्षकीय व्यवहार' को पहुंचाने में हमारे प्रशिक्षण, परस्पर संवाद और ब्रेन स्टोर्मिंग सेशन शायद असर कारक नहीं रहे।

शैक्षिक चिंतन को धरातल पर लाने के लिये ज्ञान सूचना – संप्रेषण का माध्यम बन गया हो, लाभान्वित होने वाले विद्यार्थियों तक वह 'मानवीय स्वभाव में बदलाव' का कारण नहीं बन पाया, न स्वयं में न अभिभावकों और न विद्यार्थियों में नये सोच और परिवर्तन की शक्ति को हम शिक्षा संस्थानों तक पहुंचा सके। शिक्षा नीतियां ढांचागत परिवर्तन कर पाई, लेकिन शिक्षा का परिणाम जो नयी पीढ़ी को 'रचनात्मक, संघर्षशील' और देश की 'बौद्धिक संपदा' (Intellectual Property)बनाने का था, इस तक हम कितना पहुंचे, यह सोचने की बात है।

यह एक और विवेचन का विषय है कि शिक्षक वर्ग के प्रति सामान्य जन की धारणाओं में शनै: शनै: नकारात्मकता आने की वजह क्या रही? जिस शिक्षक को 'सम्पर्क सड़कों से दूर गांव की स्कूलों में शिक्षा के दूत' के रूप में देखा जाता रहा, वह अब वैसा क्यों न रहा? शिक्षक की सुविधा भोगिता, समाज की अपने शिक्षा संस्थानों से अतिरिक्त अपेक्षाएं और शिक्षण संस्थाओं में राजनीतिक अतिक्रमण ने शिक्षक को कमजोर बनाया है। स्थानांतरण व कमजोर मनोबल की मनरूस्थिति ने शिक्षक को दोयम दर्जे में जीने को भी विवश किया है। परिणाम किसी भी व्यापक शैक्षिक नवाचार में स्वायत्तता के प्रति शिक्षक उत्साहित नहीं रहे। साथ ही उनमें एक प्रकार की उदासीनता और डिफेंसिव, टिट्यूड पनपा है, जो चिंताजनक भी है।

क्या सुधी पाठकों को ऐसा नहीं लगता कि आजादी के बाद शिक्षा व्यवस्था को हमने अलग अलग समूहों में बांधकर समग्र और परस्पर निर्भरता आधारित शिक्षा की धारणा को खंड खंड कर दिया है। शिक्षकों के परस्पर संवाद, ज्ञान, अनुभवों के आदान प्रदान और पाठ्यक्रम, पाठ्य वस्तु, शिक्षण प्रक्रिया, मूल्यांकन और प्रबंधन के क्षेत्र में आपसी सहयोग के लिये सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अब सिंगल अंब्रेला सिस्टम में कुछ सीमा तक लाना जरूरी हो गया है।

यह अत्यंत शोचनीय स्थिति है कि शिक्षा प्रबंधन को हमने स्वत: ही खिंच गयी लक्ष्मण रेखा के साथ राजकीय और निजी शिक्षा के नाम के साथ बांट दिया है। शिक्षक समुदाय को बहुत गंभीरता के साथ इस दूरी को पाटने का काम करना चाहिए। ऊपर जिस इंटलेक्चुअल प्रोपर्टी की चर्चा की गई है, वह दोनों ही तरफ समान रूप से विद्यमान है। शैक्षिक उपलब्धियों के मामले में सदैव सकारात्मक प्रतिस्पर्द्धा के साथ दोनों घटक आगे बढ़ते रहे हैं। जन कल्याणकारी सरकारों को भी इस दृष्टि से समान की स्थितियां लाने की कोशिशें करनी चाहिएं। ऐसा होना शिक्षकीय सम्मान के लिये परम आवश्यक है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि बच्चे के भविष्य की राह अक्षर ज्ञान की कठिन, ऊबड़ खाबड़ पगडंडियों से होकर ज्ञान, बोध और कौशल विकास के राजमार्ग पर आकर विश्राम पाती है। इस यात्रा में शिक्षक की भूमिका जेब्रा लाइन की तरह है। मैं और मेरी तरह भाग्यशाली हैं, वे विद्यार्थी जिन्हें अपने सपाट, ऊबड़ खाबड़ पगडंडियों के जमाने में श्रेष्ठ शिक्षकों के रूप में रोड मेपर्स और रोड मेकर्स मिले। ये शिक्षक कान उमेठते रहे, लाड़ भी करते रहे और फिर धीरे से ज्ञान गंगा में डुबोकर जमाने के साथ चलने के लिये उत्साह भी भरते रहे।

शिक्षकों की क्षमता, सीमा, संभावना और विवशता की 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' अधूरी रह जायेगी, यदि उस विशाल मातृ शक्ति को इस अवसर पर स्मरण न किया जाए, जो आज शिक्षा जगत् में सशक्त मानव संसाधन के रूप में अपनी बराबरी की भूमिका निभा रही है। आजादी के समय बारह प्रतिशत की साक्षरता दर को आज 75 प्रतिशत पर लाने में शिक्षिकाओं के रोल पर सविस्तार अलग से चर्चा की जा सकती है। आइये, प्रभावशाली शिक्षक होने के राजमार्ग को पकड़ा जाये। उसे सीखने सिखाने की वर्कशोप का मेकेनिक होने का बोध कराया जाये, दृष्टिकोण में परिवर्तन की शिक्षा का सिपहसालार बनाया जाये, शिक्षण कला में हर पल बदलते मानदंडों की कसौटी पर उसे ताजी हवा का झौंका बन जाने का भाव जगाया जाये। तब शर्तिया मौसम का मिजाज बदल जायेगा।

शिक्षा और दीक्षा

नारायणसिंह राव 'निराकार'
शिक्षाविद् व साहित्यकार
मो. 94134-23585

शिक्षा शब्द का उच्चारण करते ही इसके दो परिपार्श्व अर्थात् दो समानान्तर सन्दर्भ तुरन्त सामने आ जाते है। एक है शिक्षक और दूसरा शिक्षार्थी। प्रथम बात तो यह है कि शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही भगवान के स्वरूप है। दोनों को दोनों के रूपों का यथार्थ बोध हुए बिना शिक्षा का वास्तविक उद्धेश्य प्राप्त नहीं होगा। दोनों को दो रूपों में भगवान का ही कार्य सम्पादित करना होता है। एक को शिक्षा देनी है, वह दाता है और दूसरे को ग्रहण करनी है, वह ग्रहिता है। पर दोनों के मन में क्रमश: न तो यह अभिमान होना चाहिए कि वह शिक्षक है, ज्ञानी है और न यह हीनता-बोध कि वह अज्ञानी है। इसमें पहले का दायित्व दोगुना है। उसे शिक्षार्थी के प्रति यह जिम्मेदारी भी निभानी है कि वह उसे किसी प्रकार के हीनता-बोध से बचाये भी रखे और यह भी देखता रहे कि शिक्षार्थी की जिज्ञासा घटने न पाये, उसे अल्प ज्ञान का संतोष न होने पाये।

भगवत्कार्य समझकर शिक्षा और शिक्षित के कार्यों का पर्यालोचन करने से शिक्षा की बहुत सी समस्याएं अपने आप समाप्त हो जाती है। वस्तुत: शिक्षक और शिक्षार्थी अध्यापन और अध्ययन के वातावरण में स्वयं को ही मांजते, धोते और इस प्रकार निर्मल होते है, जिसे भगवान ने गीता में परिप्रश्नेन सेवया के संकेत से स्पष्ट किया है। वह केवल शिक्षार्थी पर ही लागु नहीं होता।

यह बात दोनों पर लागू होती है। शिक्षा का सन्दर्भ सेवा से कृतार्थ होता है। कोई यह कह सकते है कि सेवा का यहां क्या सन्दर्भ है। यह तो ज्ञान-दान है। ज्ञान-दान की क्या, ज्ञान का प्रसार है। पर प्रसार से ज्ञान का आचरण पक्ष उजागर नहीं होता। उसके पीछे शिक्षा का प्रसार एक कारण है। शिक्षा को प्रचार-प्रसार से जोड़ना मात्रात्मक अर्थ में तो उपयोगी हो सकता है, पर गुणात्मक स्तर पर इसकी कृतकार्यता तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि शिक्षक समुदाय इसे सेवा के रूप में ग्रहण नहीं करता। वस्तुत: वे निष्ठा और पवित्रता के भाव जो शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को सदाचारी बनाते है, बिना सेवा भावना के प्रकट नहीं होते।

शिक्षा का सम्बन्ध संस्कारों, साधनों और विधाओं से है। संस्कार तो व्यक्तिगत होते हैं, पर विद्या और साधना को अपेक्षित दिशा और भूमिका देनी पड़ती है। विद्या के लिए साधना और साधना के लिए विद्या, इन दोनों ही वस्तुओं को तत्व से जानने की आवश्यकता है। विद्या प्राप्ति का उद्धेश्य विवाद, धन-मन और अहंकार-वर्धन नहीं होना चाहिये। विनय केवल निरभिमानिता का पयार्य नहीं है। इसके लिए विशेष दिशा अर्थात् पारमार्थिक तत्वज्ञान, तत्व प्रवेश, तत्व बोध और तत्वामकबोध की प्रक्रिया के क्रम में अपने को ले जाना पड़ता है, क्योंकि विनय शब्द में भी धातु विद्यमान है। शिक्षार्थी और शिक्षक को इस गंभीर अनुरोध के अनुकूल अपनी जागतिक शिक्षा को भी देखना एवं परखना चाहिए।

शिक्षा अपने तत्वार्थ में एक प्रकारी की दीक्षा है। शिक्षा के बाद दीक्षान्त-भाषणों का यही अद्यतन महत्व है। शिक्षा और दीक्षा दोनों मिलकर आचार का निर्धारण एवं नियन्त्रण करते हैं। यह आचार जब प्रवृति का पर्याय बन जाता है, तब शील का उदय होता है। यह शील ही शिक्षा का चरम फल है। शील सघन साधना के पश्चात् अमृत तत्व की प्राप्ति कराता है।

महान आत्माओं की लोक-यात्राएं उनके शील तथा साधनाओं की चरम परिणतियां है। प्रत्येक व्यक्ति के शील का निर्माण शिक्षा व्यवस्था करें और सम्पूर्ण व्यक्तियों का संनिवेश एक सम्पूर्ण शीलवान समाज का निर्माण कर सके, तो पूरे समाज को विद्यारूप अमृत का फल प्राप्त हो सकेगा, ऐसा विश्वास सभी को सद्बुद्धि प्रदान करें। ऐसी मंगलमयी कामना हम सबको करनी चाहिये।

शिक्षक दिवस अध्यापक और शिक्षा की बात

डॉ. लोक सेतिया
चिकित्सक एवं साहित्यकार
मो. 94167-92330

कुछ साल पहले बचपन की बात लिखी थी, जिसमें गांव के स्कूल की शुरुआत करने वाले आदरणीय मास्टरजी गुलाबरायजी की बात की थी। उन जैसे महान लोगों को शायद हम भूल जाते हैं, जबकि ये वही बुनियाद के पत्थर थे, जिनकी दी शिक्षा से हमने जीवन में इक उज्ज्वल भविष्य हासिल किया। अज्ञानता के अंधेरे से ज्ञान के उजाले में आने की राह उनसे मिली थी। पांचवीं कक्षा तक अकेले ही शुरुआत की थी। इक कच्चे मिट्टी के मकान वाले स्कूल में। हम तब नहीं जानते थे, बाद में पता चला हमारे जैसे गांव में जिसमें आने जाने को सड़क नहीं थी, कोई साधन नहीं था, कोई पढ़ लिखकर आकर शिक्षक की नौकरी करने को तैयार नहीं होता था। मास्टरजी आये अपना शहर छोड़ गांव में रहकर स्कूल की शुरुआत की और शिक्षा के धर्म का पालन इक आदर्श की तरह किया।

स्कूल के बाद अपने घर पर भी सभी को पढ़ाते थे, कोई ट्यूशन फीस की बात हर्गिज नहीं होती थी। उनसे पढ़कर डॉक्टर वकील बैंक अधिकारी बड़े बड़े पद पर कितने लोग पहुंचे हैं। कितनों को जानता हूं मैं भी उन में शामिल हूं, लेकिन कभी सोचा ही नहीं था कि अगर उनके शिक्षा को मकसद समझने और अपने घर परिवार को नहीं अपने कर्तव्य को महत्व देने का महान दायित्व निभाने को का कार्य किये बिना हम सभी क्या शिक्षा पाते भी या वंचित रह जाते।

उसके बाद हाई स्कूल कॉलेज की पढ़ाई अपनी जगह है और जाने कितने शिक्षक और लोग सहयोगी रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है, जिन्होंने गांव में स्कूल खोलने की पहल की। गांव में बसने और गांव के बच्चों को इक शानदार भविष्य देने का आदर्श कार्य किया उनको पहले याद करना ज़रूरी है। शिक्षक दिवस पर उनको नमन करते हैं और अनगिनत अन्य शिक्षकों को जिनका आशीर्वाद मिलता रहा, जो सभी आज नहीं हैं। शायद आज उनकी तरह शिक्षा का उजाला बांटने वाले शिक्षकों की बहुत जरूरत है। क्योंकि ये विडंबना की बात है कि आजकल शिक्षा कोई धर्म या आदर्श मकसद नहीं इक कारोबार बन गया है, जिसमें गुरु बनकर ज्ञान देने की बात कम और मुनाफ़ेकी अधिक होने लगी है। डॉक्टर बनकर शिक्षक बनकर आमदनी करना अनुचित नहीं है, लेकिन क्या हम शिक्षा देकर अपने जीवन यापन करने को धन कमाते हैं और रोगियों का उपचार कर अपनी आजीविका चलाते हैं अथवा हम शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा पैसे इस मकसद से देते हैं कि धन दौलत जमाकर सकें। मार्ग दिखलाने वाले खुद राह से भटक गए हैं, तो देश के बच्चों का भविष्य कैसे बन सकता है। इस सच्चाई को भी इसी अवसर पर समझना अच्छी बात है।

शिक्षा जगत से आदर सहित निवेदन है आपको देश को इक बार फिर से सही राह दिखलानी है। अपने खुद के स्वार्थ से हटकर बचपन को संवारना है। शुभकामनाएं।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 9929639601 5
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य

तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

चतुर्दश सर्ग

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य की पंद्रहवीं शिला पर उत्कीर्ण चौदहवें सर्ग में महाकाव्यकार ने राजसमुद्र के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के शास्त्रोक्त विधानों का सुंदर चित्रण किया है। इस अवसर पर अपने मान्य परिवार प्रमुख अथवा आश्रयदाता राणा के सम्मान में आगे बढ़कर परिजन द्वारा किए गए दानों का कवि वर्णन करता है। राजा के लोक कल्याण से पूर्ण मेवाड़ को समर्पित राजसमुद्र जैसी कालजयी देन के बहुमान स्वरूप राणा की बड़ी रानी सदाकुंवरी, पुरोहित गरीबदास, राणा अमरसिंह की पौत्रवधु, टोड़ा की राजमाता, बेदला के भ्रातृ द्वय सबलसिंह व केसरीसिंह, राणा की एक और रानी हरकुंवर द्वारा इस विशाल जलाशय के विभिन्न भागों में विधिवत् अनुष्ठानों के साथ तुलादान आदि किए गए। कहा जा सकता है कि इन विशाल यज्ञों के आयोजन ने इस प्राकृतिक परिवेश की शुद्धि का तब कितना गहन संदेश जन जन की प्रेरणा के लिए प्रसारित किया होगा। इसे यजमान द्वारा देह शुद्धि के साथ श्वेत वस्त्र धारण किया जाकर संपादित किया गया। यहां महाकाव्यकार ने इसे 'अधिवासन' नाम दिया है।

'कर्तुं तुलामंडपयुग्मकं कृतं पुरोधसाकारि ततोधिवासनम्।३।

प्रतिष्ठा महोत्सव में जो सम्मान प्रजा ने अपने राणा को दिया, उससे कहीं अधिक योगक्षेम राणा ने जन और आत्म कल्याण के निमित्त ब्राह्मण, याज्ञिकों और आश्रित जन को दिया। रणछोड़ भट्ट ने इस जवाबदेह राजा के अपनी प्रजा के साथ के अंतर्संबंधों का भव्य दृश्य अपनी काव्य कला से उकेरा है।

'सुभाग्यभाजं कृतकार्यवर्यं स्वं मन्यमानोत्र विभाति वीररू'।४०।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

पंचदश सर्ग

'राज प्रशस्ति' की सोलहवीं शिला पर विशाल जलाशय की प्राण प्रतिष्ठा के और यज्ञ, दानादि के बाद भव्य शोभायात्रा व जलाभिषेक की आयोजना को महाकाव्यकार ने अपनी काव्य कल्पना के साथ प्रस्तुत किया है। जलयात्रा के मोहक चित्र खींचे गए हैं, जिनमें वाद्यों के स्वर और घोड़े हाथियों पर वेदपाठी ब्राह्मणों के आसीन होने का दृश्यात्मक वर्णन है। साथ में जल भरने के लिए सिर पर कलश धारण किए रंभा सदृश स्त्रियों का वर्णन किया है।

इस सर्ग में, वरुण पूजन, नवग्रह पूजन और रात्रि जागरण कर समस्त वेद विहित यज्ञ कर्मों का समाधान करने का उल्लेख है। राणा राजसिंह ने राजसमुद्र को रत्नाकर का सम्मान देने हेतु इसमें नवरत्नों को समर्पित किया। धातुओं से बने जलचरों को प्रतीक रूप में छोड़ राणा ने राजसमुद्र से निरंतर जल संवर्द्धन की कामना की। समुद्र नाम की सार्थकता और रत्नाकर बनने की इच्छा भी प्रकट की गई।

'मयास्य वै राजसमुद्र नामोत्पत्तौ तु हेतुरूकथियोयमेव।'।१९।

सवत्सा गाय का दान कर 'गोतारण विधान' का यहां उल्लेख है। ये समस्त शास्त्र सम्मत क्रियाएं राणा राजसिंह की भारतीय आचार परंपरा में अगाध आस्था का परिचायक हैं। इसी सर्ग में जलाशय के नामकरण का भी उल्लेख है। 'राजसागर' जन्म नाम और 'राजसमुद्र' मानक उच्चारण होने से इस नाम को राणा ने स्वीकार किया।

'इत्युक्तवानेव हि राजसागरस्तदुत्तरं राजसमुद्र इत्यपि ।।३०।।

इस प्रकार नव कुंडों में आह्वान की गई अग्नि की साक्षी में होम करा राजसमुद्र की 'भद्र प्रदक्षिणा' कर राणा राजसिंह जी ने अपने महत् सत्कर्म को विश्राम दिया।

प्रस्तोता :
डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार द्वारकेश मार्ग,
कांकरोलीमो. 9460252308

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

यूपी वाले

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूत'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय यूपी 8604112963

नामकरण, मुंडन, कर्णछेदन, भूमिपूजन या फिर गृहप्रवेश हों, सभी शुभ कर्मों के मुहूर्त शोधन का कार्य पंडितजी ही करते हैं। लगता है कि यूपी के ब्राह्मणों ने काशी के ठाकुर प्रसाद छाप पत्रा (पंचाग) से शुभ मुहूर्त निकाला है कि 2020 में अपराध करके पुलिस की पवित्र गोली खाकर स्वर्गारोहण करेंगे। कुछ महाज्ञानी ज्ञान बघार रहे हैं कि अपराधी को पूजा नहीं जाएगा। सही कह रहे हैं जब गुप्ता साहब बस को 34 यात्रियों समेत हाईजैक करते हैं और मुठभेड़ के बावजूद पैर में ही छेद करवा पाते हैं। वहीं कहीं द्विवेदी, तिवारी, मिश्रा जैसा टाइटल लगा होता तो एनकाउंटर का लाभ उठाकर स्वर्ग की डोरबैल बजा रहे होते।

लगता है ब्राम्हणों ने यहां भी अन्य वर्गों के साथ भेदभाव किया है। ऐसा भी हो सकता है कि भगवान से सीधे राफ़्ता कायम करके यह बोल दिया होगा कि ट्विंटी- ट्विंटी में फोर ट्विंटी बिलकुल नहीं चलेगा, हमें हेवेन में सीधे एंट्री चाहिए। भगवान ने भी कहा होगा अरे! भूसुर ब्रो आपके लिए दरवाजे सदैव खुले हैं। आप जब चाहे आ सकते हैं। यह स्वर्ग आपके ही दम पर कायम है, पर शुभ मुहूर्त आप देख लीजिए। अगर ब्राह्मणों ने यह बात सार्वजनिक की होती तो इस पुण्य का लाभ औरों को भी मिल जाता।

कुछ फेंकू इतिहासकार फेंक रहे हैं कि ब्राह्मण तो पहले भी मर रहे थे, अब भी मर रहे हैं। फिर इतना हो-हल्ला क्यों हो रहा है? उनको जानकारी होनी चाहिए कि न्याय का मंदिर कोर्ट हैं गड्ढे वाली सड़के नहीं। रही बात ब्राह्मणों के मरने की तो भारतीय इतिहास में जिस भी सत्ता में ब्रह्म हत्याएं हुई हैं वे समूल नष्ट हो गई। इस समय ब्राह्मणों की तीन श्रेणियां बना दी गई हैं, एक रावण वाली, दूसरी परशुराम वाली और तीसरी सुदामा वाली। श्रेणियों के अनुसार मानापमान देने की सलाह दी जाती है। अगर आप दीनता के साथ मुंह पर मास्क नहीं, ताला लगाकर हां में हां मिलाओगे तो सुदामा कहलाओगे और कॉलोनी पा सकते हैं, अन्यथा परशुराम बनने की कोशिश की, तो धनुष जबरन छीन लेंगे और चिल्लाने भी नहीं देंगे। मन का संताप मन में ही रह जाएंगे।

जो भी ब्राह्मण जी हुजूरी नहीं करता है उसे रावण वाली श्रेणी में रखकर मनमाना बोलते और करते हैं, ताकि कोई खुलकर विरोध न कर सकें। जो करेगा उस पर राक्षस का साथी घोषित कर देंगे। जिन्होंने रामचरित मानस को मानस में बसाया होगा, केवल पढ़ा नहीं होगा। उन्हें ज्ञात कि रामादल में सबकी बात सुनी जाती थी और अपराधी को सुधरने का अवसर दिया जाता था। रावण को सरेंडर (शरणागति) के लिए पक्ष- विपक्ष दोनों ने समझाया पर जब नहीं माना तब गोद्विज हितकारी भगवान श्रीराम जी ने सामने से छाती और नाभी पर वार किया, यह नहीं कि पीठ पीछे तीर चलाया। रामराज्य में दण्ड न्याय के अनुसार मिलता था, अन्यथा जब भगवान राम ने रामेश्वरम् की स्थापना हेतु पुरोहित रावण को बुलाया था, तभी एनकाउंटर कर देते। रावण अपराधी था इसलिए मारा गया, यह धारणा गलत है। रावण अपराधी था, पर स्वीकार करके सरेंडर (शरणागति) नहीं किया, इसलिए मारा गया। रावण का सरेंडर से इंकार नामक लेख सप्रमाण लिखा जा सकता है उस विषय में विस्तार से चर्चा फिर कभी। यूपी में जब चुनाव आते हैं, तो ब्राह्मणों को अपनी तरफ मिलाने के लिए तरह तरह प्रलोभन दिए जाते हैं। कोई आरक्षण का दाना डालता है, कोई पौराणिक ब्राह्मण महापुरूषों की भव्य प्रतिमा स्थापना की बात करता है, तो कोई समितियां बना डालता है। पर जीतने के बाद कोई मिश्राजी से सैंडिलें उठवाता है तो कोई दुबे जी को उड़वा देता है, तो कोई धर्म की दुहाई देता है।

ब्राह्मण शिरोमणि बाबा तुलसीदासजी ने कहा था कि अपने कर्मों का भोग सभी भोगते हैं, यह बात ब्राह्मणों पर अक्षरंश: लागू होती है। उन्होंने हर प्रकार की चापलूसी की, लेकिन ब्राह्मण आयोग नहीं बनवा पाए, जबकि अन्य वर्गों के आयोग हैं, जो उस वर्ग के हितों के हनन होने पर मुद्दा तो उठाते हैं। संगठन की कमी साफ झलकती है जिसके अत्याचार होते थे, हैं और रहेंगे। इस बात को बुजुर्गों ने बहुत पहले कहावत में समेटा था।

बाभन, कूकुर, हाथी। नहीं जाति के साथी।।

नेताजी की प्रेस कांफ्रेंस

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 77658-54969

बाढ़ राहत समीक्षात्मक कार्यो की प्रगति रिपोर्ट जारी करने के लिए मंत्रीजी ने अपने पार्टी कार्यालय में एक प्रेस कॉफ्रेंस आयोजित किया। पेन, पेनड्राइव, कलम, कैमरा आदि लेकर लगभग सभी रिपोर्टर नेताजी के कार्यालय पहुंच गए।

तय समय पर नेताजी पहुंचे और जैसे ही दोनों हाथ जोड़कर उपस्थित पत्रकारों का अभिवादन करते, तब तक शोरगुल चैनल के रिपोर्टर ने उनके दोनों हाथों के बीच माइक घुसैड़ दिया।

पत्रकार– सर... सर! जैसा कि आप जानते हैं कि प्रतिवर्ष आने वाले बाढ़ के कारण प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र डूब जाता है। फिर भी आपके या आपकी सरकार द्वारा इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है ऐसा क्यों?

नेताजी (भुनभुनाते हुए) अजीब बुड़बक हो भाई कौनो मैनर अर है कि नहीं तुमको! अरे भाई थोड़ा सांस लेने दो, अभी आए नहीं कि टपक पड़े माइक लेकर...। देखिए आपकी जानकारी के लिए आपको बता दें कि हम और हमारी सरकार बाढ़ आने से एक महीना पहले से ही एनडीआरएफ और एसडीआरएफ टीम को अलर्ट मोड पर रखते है। बाढ़ पीड़ितों के लिए हजारों टन चुड़ा गुड़, मुड़ी रिजर्व रखवाते हैं। पीड़ितों के लिए नाव और अपने क्षेत्र भ्रमण के लिए हेलीकाप्टर तैयार रखते हैं। बाढ़ से बचाव के लिए टीवी एवं अखबार हेतु विज्ञापन तैयार करवाते हैं और आप कहते हैं कि हर साल आने वाले बाढ़ के ऊपर हमारी सरकार ध्यान नहीं देती। हद है मरदे... शोरगुल चैनल के रिपोर्टर को दुत्कारते हुए नेताजी बोले।

शोरगुल चैनल के पत्रकार की किरकिरी होते देख मन ही मन प्रसन्न हो ऊपर से संवेदना भाव व्यक्त कर स्थिति को संभालते हुए चीख़ पुकार लाइव के रिपोर्टर ने कहा– सॉरी सर दरअसल हमारा आशय ये था कि हर साल आने वाली इस त्रासदी का स्थायी समाधान क्यों नहीं करते आपलोग!

कौन भकचौंधड़ सब पत्रकार को बुलाय लिए हो जी! हमको बोलने ही नहीं दे रहा ससुरा, अपने भौंक रहा है, पत्रकार के इस प्रश्न पर कुनमुनाते हुए कार्यकर्ता की ओर देखकर धीरे से बुदबुदाए फिर लंबी मुस्कान बिखेरते हुए बोले– देखिए जी करोड़ों की जनसंख्या है और बिजली, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, अपराध आदि सहित प्रदेश की हजारों स्थायी समस्या है, जिस पर ध्यान देते देते पांच साल कब निकल जाता है, पता ही नहीं चलता और रही बात बाढ़ की, इत सीजनल है कभी आया त कभी नहीं आया। वैसे भी नियमित पार्टी बैठक, पार्टी प्रचार, शिलान्यास और उद्घाटन, सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित विभिन्न कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति, पार्टी परिवार, निजी परिवार आदि की व्यस्तता के कारण पांच साल में अपने विधानसभा क्षेत्र में एकाध बार भी घूमने का समय नहीं मिल पाता। समयाभाव के कारण ही बाढ़ के स्थायी समाधान पर ध्यान नय दे पाते हैं... हे हे हे...।

नेताजी की बात खतम हुई नहीं कि भड़कदार न्यूज़ के रिपोर्टर ने माइक उचकाते हुए पूछा– सर पक्के बांध का निर्माण क्यों नहीं हो पाया अब तक!

नेताजी टेढ़ी नजरों से रिपोर्टर को देखकर बोले– बड़ा बकलोल हो जी! दर्शन शास्त्र अर कुछ पढ़े हो कि नहीं! अरे भाई नदी की धार प्राकृतिक है और मिट्टी का कच्चा बांध भी प्राकृतिक। प्रकृति का प्रकृति के साथ नैसर्गिक रिश्ता होता है। फिर कृत्रिम पक्का बांध बनाकर प्रकृति के विरुद्ध हम क्यों जाए। वैसे भी सीमेंट, बालू और गिट्टी से बना बांध का कौन्हो भरोसा है, कब प्रकृति अर्थात मिट्टी के जमीन से नाता तोड़ ले।

नेताजी अपनी बात पुरी करते तब तक एक कार्यकर्ता बोल पड़ा– अभी हाल में न एगो पुल पानी से दह गया है नेताजी।

नेताजी कार्यकर्ता की ओर उंगली दिखाकर पत्रकारों से बोले– बड़ी होशियार है राम भरोस, पुरा दिन न्यूज़ देखते रहता है! हां त हम कह रहे थे कि प्रकृति का तोड़ सही नहीं होता।

बट द लेक ऑफ परमानेंट सॉल्यूशन इज डेंजरस फोर फ्लड इफेक्टेड एरिया एंड देयर नेटिव्स चिल्लपो इंग्लिश चैनल के रिपोर्टर ने चिल्लाते हुए आगाह किया।

अंग्रेजी सुनकर नेताजी की भौंह में भाइब्रेशन होने लगा। पास खड़ा कार्यकर्ता नेताजी के कान में फुसफुसाने लगा। संभवत: वह पत्रकार की बातों का हिन्दी अनुवाद कर रहा था।

नेताजी गले में पड़े पार्टी गमछा के दोनो सिरा पर हाथ फेरते हुए बोले– या या... आई अंडरस्टैंड...। देखिए बाढ़ हमेशा बुरा नहीं होता! आप बाढ़ का सकारात्मक पहलू देखिए, बाढ़ के दौरान वैसे घरों तक भी पानी पहुंच जाती है, जहां हमारी सरकार हर घर जल योजना के तहत भी पानी नहीं पहुंच सकती! लाखों करोड़ों के खर्च पर स्वीमिंग पुल या वाटर पार्क की बजाय बाढ़ ग्रस्त गड्ढे और खेतों के नेचुरल वाटर पार्क में बच्चे स्वीमिंग का प्राकृतिक आनंद लेते हैं। बाढ़ के महीना में आपके चैनल को टीआरपी बढ़ाने के लिए प्राकृतिक न्यूज़ मिल जाता है और बाढ़ के पश्चात प्रभावित इलाकों का दौरा कर लेने से हमें भी जन प्रतिनिधित्व निभाने का मौका मिल जाता है। अब आप तो जानते ही हैं कि हमारी भोली भाली जनता नदियों को गंगा मैया, कोसी मैया, गंडक माता के रूप में पूजते है। इसलिए उनकी निश्छल आस्था पर माता स्वयं उनके घरों में पधारती और उन्हें धन्य करती है। उ कहते हैं न कि मन चंगा त कठौती में गंगा।

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक कराएं प्रति:
94142-39648

लेकिन सर हर साल बाढ़ रूपी त्रासदी तो जनता को ही झेलनी पड़ती है और कभी बाढ़ पीड़ित जनता ने आपकी इस उदासीनता पर सहनशीलता को त्यागकर हल्ला बोल कर दिया तो...। हो हल्ला न्यूज़ का एंकर बोल पड़ा।

अजी चिंता मत करिए हमारी जनता काफी सहनशील और धैर्यवान है, जब ये लोग डेली के मंहगाई, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी आदि स्थाई प्राब्लम को काफी हिम्मत और हौसला से झेल लेते हैं त फिर इ एकाध साल में आने वाला टेम्परारी बाढ़ इनकी सहनशीलता का क्या बिगाड़ लेगा जी! खैर चलिए इ पुछाताछी बहुते हुआ अब हमें निकलना है और हां आप लोग भोजन करके जाइएगा। पीछे हॉल में वेज– नॉनवेज दोनों का बूफे वाला इंतेज़ाम है।

इतना कह चिर परिचित अंदाज में हाथ जोड़ नेताजी मुस्कुराते हुए कांफ्रेंसस हॉल से बाहर निकल गए।

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

Spiritual Practice

Mahima used to recite 'chalisa', mantras and Geeta shlokas in school programs and that was actually a surprise for everyone since she had not yet studied Sanskrit but she was fantastic in her voice, rhythm and expressions. She was the star of the school and she remained throughout her journey while she faced teasing for being what she was. In late years students when grew up and had own kids could recall Mahima and her decent behaviour, etiquettes and happiness.

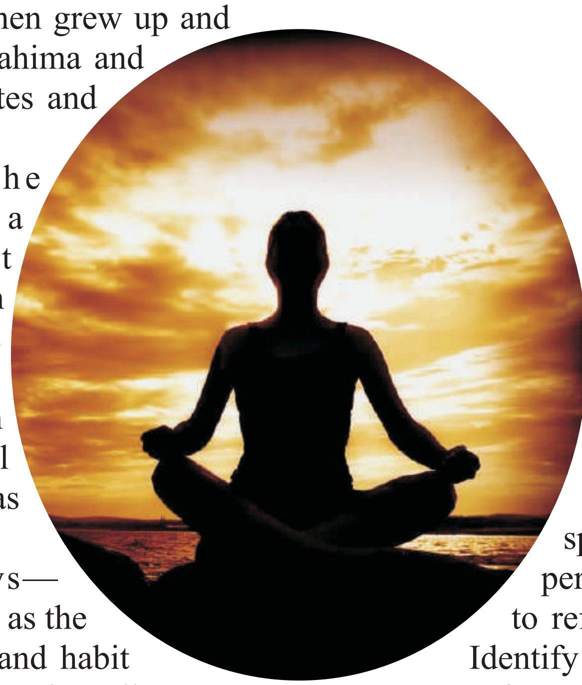

All understood the importance of being born in a spiritual family and that beginning force to perform daily rituals which in late years becomes the actual wealth. Yes, Mahima belonged to such a family having strong spiritual practices and beliefs and so was her personality.

As the saying says—'Practice makes a man perfect' as the practice becomes your habit and habit becomes the behaviour. But there is really no such thing as perfection. When we practice, we grow more proficient. The idea behind daily spiritual practice is to take care of our spiritual selves.

A daily spiritual practice to any ritual, we perform each day is to nurture our deep inner being. A spiritual practice quiets the mind and brings us into a state of peace or harmony with ourselves. A spiritual practice can take many forms—but it is not the form that matters so much as the intent.

In fact, a spiritual practice does not even need to be explicitly spiritual to be effective. It simply needs to be something that helps you turn inward and connect with your own truth and purpose.

You do not need to be religious or even spiritual to benefit from developing a spiritual practice. A daily spiritual practice is not worship; it is about tuning in to your own sense of spirit.

There are countless activities and rituals for spiritual practices. Anything that allows you to quiet your mind and connect with your deepest self could be considered a spiritual practice. Like:

Prayer
Meditation
Reading
Spiritual
Books
Yoga
A walk
Writing
Painting
Dancing
Singing & Chanting

Developing a daily spiritual practice is a deeply personal process. Take some time to reflect on what will serve you: Identify an activity that helps you feel a sense of peace and connection; then commit to setting aside time each day for your spiritual practice. Many people choose to perform their spiritual practice first thing in the morning. Set a time that works for you and feel the change.

The key to meditation—or any spiritual practice—is consistency. Remember, it is a commitment to nurturing yourself.

That is one promise to you for yourself and you are to keep that!

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School Nathdwara

किराए का मकान

अब तक तो मैं यही समझ रहा था कि मकान हमारा अपना है। इस बात को लेकर मैं और पिन्टू कई बार झगड़ भी चुके थे। वह कहता– यह मकान तो मेरा है, तुम किराए पर रहते हो। मैं उलझता– नहीं, तुम किराएदार हो, मैं मकान मालिक हूं और अब पिताजी मम्मी से कह रहे थे कि हमें दूसरा मकान देखना होगा। मकान मालिक की बेटी की शादी है। कोई शादी वादी नहीं है, सब बहानेबाजी है।ज्यादा किराया देने वाले मिल गए होंगे। मनुष्य भी कैसा हो गया है। पैसो के लिए बरसों पुराना व्यवहार तोड़ देता है।मम्मी जल भूनकर बोली।

मकान खाली करते हुए मुझे बहुत दुःख हो रहा था। गुस्सा भी खूब आ रहा था। मैंने आव देखा न ताव, छत पर जाकर रंग बिरंगे फूलों के तमाम गमले पटक कर टूकड़े टूकड़े कर दिए। ये गमले मैंने और भैया ने बेकार मटकों में मिट्टी भरकर बनाए थे। फिर मैंने अपने अध्ययन कक्ष की दीवारों से रंगीन और चिकने कागज वाले अखबार उखाड़ डाले। यही नहीं दीवार पर लिखे स्वागतम् को भी मैंने मिट्टा दिया। अब मैं चिकन गार्डन की ओर लपका, जहां मम्मी– पापा ने भिंडी, टमाटर और बैंगन उगा रखे थे। वहीं एक हरी– भरी अंगूर की मस्त बैल भी छाई हुई थी।

बंटी सामान पैक हो गया है, चलो जल्दी! तुम्हारे पापा कहां गायब हो गए। उन्हें भी बुला लो। मम्मी ने पुकारा। मैंने अनसुना कर दिया। पापा क्यारी की मेड़ पर बैठकर पौधों को निरख रहे थे। मैं समझ गया कि पापा भी इन्हें परमधाम पहुंचाना चाहते हैं। कुल्हाड़ी लाऊ पापा। पापा चौंके! नहीं बेटा, जरा एक– दो बाल्टी पानी ले आओ। न जाने बैचारों को कब नसीब हो। वे मेरी पीठ सहलाते हुए बोले। उनका चेहरा जूही के फूल की तरह मासूम और भोला लग रहा था। मैं कुछ देर खामोश रहा, फिर उनके गले में झूम गया। ओह पापा! इस तरह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था।

माधव नागदा
वरिष्ठ साहित्यकार
मो. 98295-88494

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

शिक्षा को सीख

पड़ोस के रामू दादा के घर से तेज तेज आवाजें सुनाई दे रही थी। तीनों बेटे आपस में उलझ रहे थे। रामूदादा को परेशान देखकर गांव के रिटायर्ड मास्टरजी भी आकर सभी को समझाने लगे। इनकी पत्नी की अभी पन्द्रह दिनों पूर्व ही मृत्यु हुई और उसी मौके पर पुरा परिवार इकट्ठा हुआ। मैंने सोचा शायद मां के इलाज और मृत्यु के बाद के खर्च पर विवाद हो रहा था। जाकर देखा तो मामला कुछ और ही था। रामूदादा अपने पोते की आठवीं के बाद पढ़ाई का विरोध कर रहे थे, जबकि श्याम और दिलीप आगे की पढाई कराने पर जोर दे रहे थे। मास्टरजी आने के बाद उनका पक्ष और भी मजबूत हो गया।

रामूदादा का बड़ा बेटा श्याम इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके अपने साथ पढ़ने वाली एक लड़की से शादी करने के बाद शहर में ही नौकरी करता है। दूसरा बेटा मदन आठवीं में फेल होने के बाद ही स्कूल छोड़कर खेती का काम करने लग गया था। मास्टरजी के लाख समझाने पर भी उसने बाद में कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा। अपने पिता से खेती के गुर सीखकर पूरा ध्यान देकर बेहतर पैदावार कर रहा है। साथ ही घर में अपने माता पिता की सेवा भी करता है।

तीसरा बेटा दिलीप बीए, बीएड कर तीन-चार सालों तक शहर में कोचिंग कर सरकारी नौकरी तैयार करने के बाद भी नाकाम रहा, तो अब गांव के प्राइवेट स्कूल में पांच हजार की नौकरी करता है। मास्टरजी रामूदादा को शिक्षा का जीवन में महत्व समझा रहे थे। बता रहे थे कि शिक्षा के बिना बालक का जीवन अंधकारमय हो जाता है, मगर रामूदादा उनकी बात को काटकर कहने लगे।

मास्टरजी आपकी उच्च शिक्षा हमारे क्या काम की? श्याम की मां मरते समय श्याम को याद करती रह गई और यह अन्तिम समय तक अपनी मां को देखने तक नहीं आ सका। क्या आजकल आपकी शिक्षा में मां-बाप की सेवा का अध्याय पढ़ाया जाता है? नहीं, सिर्फ पढ़ाया जाता है कि कैसे एक दूसरे से आगे निकलना है। इस प्रतिस्पर्द्धा ने सभी को दौड़ना तो सिखाया, मगर अपनों के पास भी रूकना नहीं सिखाया। मास्टरजी आपकी स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई करके भी दिलीप आज भी पांच हजार की नौकरी करने पर मजबूर है। ऊंची पढ़ाई करने के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिली और अब खेती का काम वह कर नहीं सकता। इतनी किताबें पढ़ने के बाद भी कोई हुनर नहीं सीखा सकें, तो इस पढ़ाई से क्या लाभ? मेरा बेटा मदन आठवीं के बाद ही खेती में लगा और आज बिना किसी लाज शरम के सब काम कर लेता है। इसकी मां के अन्तिम दिनों में भी इसी ने सेवा की।

रामूदादा की बात सुनकर मास्टरजी भी विचार मग्न हो गये और कुछ देर बाद बोले रामूदादा आप सही कह रहे हो, आज की हमारी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के साथ ही कौशल विकास पूर्ण शिक्षा का अभाव है। सरकार को शिक्षा नीति में बदलाव करने चाहिए, मगर फिर भी शिक्षा और शिक्षक का महत्व कभी कम नहीं होता है। योग्य शिक्षा की बदौलत ही कोई विद्यार्थी रॉकेट उड़ाता है, तो कोई मंगल ग्रह पर जीवन तलाश करता है। देख नहीं रहे पढ़लिख कर बने डॉक्टरों की बदौलत ही आज कोरोना काल में हम सुरक्षित है।

मास्टरजी की बात सुनकर रामूदादा शिक्षा और शिक्षक का महत्त्व समझ गए थे। फिर वे अपने पोते की शक्ल में एक डॉक्टर को ढूंढने लगे।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

शेर से कुश्ती लड़ने का जज्बा था मन्नासिंह दायजी में

प्रभु श्री द्वारकाधीश के ब्रज से कांकरोली आगमन पर उनके साथ अनेक पुजारी, सेवक, सेवादार और भोग बनाने वाले रसोइए व अंगरक्षक भी कांकरोली आ गए। उन्हीं में श्री भोजराजजी भी अंगरक्षक के रूप में कांकरोली आए। उसके बाद उनके बेटे श्री लालसिंहजी भी द्वारकाधीश प्रभु की सेवा में रहे और उनके बेटे श्री वल्लभजी व वल्लभजी के बेटे लच्छीरामजी द्वारकाधीश की सेवा में लगे रहे। इसी दौरान सन् 1866 में लच्छीरामजी के घर एक विलक्षण प्रतिभा के धनी बच्चे का दशहरा पर्व पर जन्म हुआ, जिसका नाम मन्नासिंह रखा गया।

बचपन से ही वे अच्छी कद काठी के हष्ट पुष्ट और बलशाली थे। समय के साथ साथ अखाड़े में जा कसरत करना, कुश्ती लड़ना और जोर आजमाईश करना प्रारम्भ कर दिया और समय बीतते बीतते वे मेवाड़ के अच्छे पहलवानों में गिने जाने लगे। उनके एक भाई श्री हरिसिंह भी थे। 30-35 की उम्र तक वे 6 फीट हट्टे-कट्टे कसरती बदन के आकर्षक नोजवान की तरह दिखाई देने लगे। चारों ओर उनके बल और चुश्ती फुर्ती की वाहवाही होने लगी। इसी दौरान उदयपुर में मेवाड़ के राणा भोपालसिंहजी दरबार के हाथों एक बड़ा भारी मजबूत 9 हाथ का जवान शेर अरावली के जंगलों से पकड़ कर उदयपुर लाया गया। यह खबर आग की तरह सब तरफ फैली और लोगों का हुजुम उस शेर को देखने उमड़ पड़ा। जब यह खबर कांकरोली पहुंची, तो मन्नासिंहजी कांकरोली के तात्कालिक महाराज बालकृष्णजी से आज्ञा ले शेर को देखने नहीं, अपितु उससे दो दो हाथ यानि कुश्ती लड़ने उदयपुर पहुंच गए। हालांकि दरबार भोपालसिंह जी ने शेर से लड़ने की इजाजत तो नहीं दी, पर उनके जोश और जज्बे की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा मेवाड़ की यह धरती शूरवीरों से भरी पड़ी है और उन्होंने खुश होकर मन्नासिंहजी को हीरे, पन्ने व माणक के साथ उस समय के चांदी के सिक्कों की एक थैली भेंट दी। मन्नासिंहजी ने उस थैली को सर आंखों चढ़ाया और वहीं उसे खोलकर उसमें से चांदी का एक कलदार सिक्का निकाला और अपने अंगूठे इस तरह मसला कि सिक्का फेलकर चौड़ा हो गया। दरबार में हलचल मच गई। मन्नासिंहजी ने थैली और वो चिपटा सिक्का दरबार के चरणों में रखा और कहा आपकी कृपा से मुझ पर प्रभु द्वारकाधीश की बहुत ही कृपा है। चक छन रही है। मजा तो तब आता जब आप मुझे शेर से लड़ने की आज्ञा देते और वे पुन: कांकरोली लौट आए।

यहां महाराजश्री बालकृष्ण महाराज ने जब मन्नासिंहजी की भोपालसिंहजी की भेंट का वाकिया सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने मन्नासिंह जी को बम्बई भुवनेश्वर में श्री द्वारकाधीश मन्दिर की सेवा के लिए सन् 1924 में अपने परिवार सहित बम्बई भेज दिया। वे बम्बई में ही द्वारकाधीश मन्दिर की सेवा में लगे रहे।

उसी दौरान उनके दोनों पुत्र श्री श्यामसुन्दर व श्री गिरिराजजी भी बड़े हो चुके थे। अत: बम्बई में ही उन्होंने काम धंधा शुरू कर दिया। उनके दूध का कारोबार उन्हें रास आया और दूध के इस व्यापार में उन्हें बड़ी सफ्लताएं प्राप्त हुई और दोनों ही भाईयों ने अपना घर बार बम्बई में ही स्थापित कर लिया।

श्री गिरिराजजी ने कार्य को और विस्तार दे इस महानगर में अपना स्थान बना लिया। वे कई बड़े बड़े कुश्ती दंगल कराने लगे। भुवनेश्वर में उन्होंने एक अखाड़ा भी प्रारम्भ किया।

उसे ऊंचाईयां प्रदान की। दारासिंह, रंधावा, किल्लर दारा, मास्टर चंदगीराम, गणपत आंडलकर, हरमितसिंह कई विदेशी पहलवानों को बुलाकर उन्होंने कई दंगल प्रतियोगिताएं कराई, जिसमें बम्बई के कई नामी गिरामी फिल्मी कलाकारों व राजनेताओं से श्री गिरिराजजी के मधुर संबंध बन गए। मेवाड़ का कोई भी व्यक्ति बम्बई जाता और उनका सम्पर्क गिरिराजजी से होता तो वे हरसंभव सहायता करते, चाहे रुपए, धंधा कारोबार जमाने या नौकरी आदि में हर तरह से सहायता करते। मुझे याद है सन् 1960 में कांकरोली से एक भ्रमण दल जिसमें मैं भी था अजन्ता एलोरा गुफा देखने गया। हमारे स्कुल के लगभग 40 लड़कों का दल जब बम्बई पहुंचा तो गिरिराजजी ने हमें तीन दिन रोककर पूरा बम्बई घुमाया और खाने, रहने का सारा खर्च स्वयं ही उठाया। कई फिल्मी सितारों से मिलवाया। उस समय के ऐतिहासिक फिल्मों के हीरो जयराज जो गिरिराजजी के खास मित्र थे। उनसे कहा ये मेरे गांव के होनहार बच्चे हैं। अजन्ता एलोरा जा रहे थे, मैंने इन्हें रोक लिया। जयराजजी बहुत खुए हुए। अपने पिता श्री मन्नासिंहजी के सद्कार्य और द्वारकाधीश प्रभु की भक्ति का ही पुण्य प्रताप था कि उनकी संतान ने इतना नाम कमाया। अपने पुत्रों पर सारी जिम्मेदारियां छोड़ सन् 1940 में वे पुन: कांकरोली आ गए। स्व. महाराज श्री बालकृष्णजी के समय 84 कोस परिक्रमा के दौरान ही यात्रा में उनकी धर्मपत्नी का देहांत हो गया और उन्होंने अपना सारा ध्यान प्रभु भक्ति में लगा दिया और शांत स्वभाव लिए वैराग्य की अवस्था में आ गए। तन पर बस एक लंगोटी लगाए ध्यान मग्न रहने लगे, बहन बेटियों के सामने और प्रभु के दर्शन के वक्त जरूर वे कमर में एक मलमल का अंगोठा लपेट लेते और कंधे पर मलमल का अंगोछा डाल दिया करते । घर से जब बाहर निकलते तो कान के बराबर एक लठ्ठ जरूर उनके पास होता था। पूरे कांकरोली में लोग उन्हें मन्ना दायजी के नाम से ही पुकारा करते थे। पत्नी की मृत्यु के बाद वे शांत और प्रभु भक्ति में ही अपना जीवन बीताते रहे। प्रभु की सेवा करना और विट्ठलविलास बाग में जाकर आराधना, भजन कीर्तन और बाग का बागवा बन अपनी दिनचर्या दिखाने लगे। इसी दौरान सन् 1946 में उनके बड़े बेटे श्यामसुन्दर का बम्बई में ही देहावसान हो गया। और सारी जिम्मेदारी गिरिराजजी पर आ पड़ी।

जिन्होंने भी मन्नासिंहजी को जवानी में देखा वे बताते हैं कि एक एक मन शक्कर की बोरी अपनी दोनों बगलों में दबा वे दौड़ लगाया करते थे। मेरा भी सौभाग्य रहा कि मैंने उन्हें बचपन से ही देखा। बात मेरे बचपन की है, हम स्कुल में पढ़ा करते थे, विट्ठल विलास बाग में नारंगी, आडु, अनार आदि अनेक फलों के पेड़, पौधे थे। हम 4-5 साथी मध्यावकाश की छुट्टी में मैं, अब्बास, कमलसिंह, भंवर बोल्या, गोविन्द आदि उन फलों को खाने विट्ठल विलास बाग में अक्सर चले जाया करते थे। कभी कभी सफल हो जाते तो कभी लठ्ठ की आवाज के साथ एक कड़क आवाज सुनाई देती। कौन रूक जाओ, कहां जा रहे हो, हम सहमे सहमे बोल पड़ते दायजी घुमने जा रहे हैं। फिर वही कड़क आवाज पुन: सुनाई देती, यहीं से घुम जाओ और हम मारे डर के वहीं से पुन: लौट पड़ते।

ऐसे कर्मठ, तपस्वी और बलवान व्यक्तित्व के धनी पहलवान श्री मन्नासिंहजी 26 जून 1977 को 110 वर्ष से भी ज्यादा उम्र कर परलोक सिधार गए। बाकी रह गई उनके किए कार्यों और करिश्मों की यादें जिन्हें आज याद कर हम उन्हें हृदय से श्रृद्धांजलि देते हैं।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार,
जलचक्की, कांकरोली, राजसमंद
मो. 98284-75288

राजस्थानी केणावतां

आंधा नै आरसी और अणपढ़ ने फारसी।

अर्थात् – अंधे आदमी को दर्पण दिखाना और अनपढ़ को पुस्तक पढ़ाना अयोग्य पात्र के सामने योग्य साधन का प्रयोग कोई काम का नहीं है।

पूत कपूत वेई सके, पण माता कुमाता नी वे

अर्थात् – यह देखा व सुना जाता है कि जवान होने पर पुत्र दुर्बुद्धि हो सकता, लेकिन माता अपनी संतान की शुभ चिंतक ही होती है।

मां पापणी तो भी आपणी

अर्थात् – कहते हैं कि मां की ममता अपनी संतान के प्रति अगाध होती है, चाहे वह गरीब हो या दु:खी, मगर अपनी संतान को हमेशा सुखी देखना चाहती है।

छोरा छोरी घर वसे तो बाबो बूढ़ी क्यूं लावे।

अर्थात् – परिवार बुजुर्गों से चलता है। जिस परिवार में बूढ़े मां– बाप या दादा–दादी न हो, तो वो घर अस्त व्यस्त हो जाता है।

मन मतंग माने नहीं, जब तक खता न खाय।

अर्थात् – मानव का मन बड़ा चंचल होता है। जब तक ठोकर नहीं लगती, तब तक इंसान संभलकर नहीं चलता है।

मायड़ री ममता

मध्यप्रदेश सूं एक संगीत गायक दाऊ पेन्टर राजसमंद आवतो। बोलवा में तुतलावतो, अटकतो, रूक– रूक न बोलतो। पण गावतो तो फर्राटबंद बोल निकलता हा। वो मायड़ री ममता पे एक बोध कथा गावतो हो। वाईरी तरियां सूं ही...। एक डोकरी जीरे एकाएक टाबर हो। मेनत मजदूरी करीन बेटा ने मोटो करियो। घरवाळो जवानी में मरी ग्यो। छोरो बीस– पच्चीस बरस रो वीयो, तो चढ़तो खून अर गांव रा उत्पाती छोरा री संगत में पड़ी ग्यो। पड़ौस में एक नवोढ़ा छोरी सूं वीरी चार वी। छोरे उणरे आगे मनड़े री वात राखी। मुं थाराऊं ब्याव करणो चाहुं।

छोरी कह्यो के एक सर्त है के म्हनै थारो भरोसो जद आवे, जदी थूं थारी मां रो कालजो काढ़ नै म्हने दें, तो मूं जाणू के थूं म्हारी केण में चाले लो। छोरी रे आगे छोरे हां भर दी। एक दन नशो करीने रात में सूती थकी मां पे तलवार सूं वार कर वीरो कालजो निकाल नै आपरी प्रेमिका रै कने ले चाल्यो। अंधेरी रात एक भाटा सूं ठोकर लागी तो धूळ भेळो वेई ग्यो। मां रो काळजो धरती पै सूं बोल्यो– अरे म्हारा लाल ! थारे चोट तो नी आई ?

छोरो सुण्यो, अणसुण्यो कर काळजो उठाई नै प्रेमिका कने पौच्यो। छोरी वीने देखीन हक्की– बक्की वेईगी अर बोली। अरे नीच ! थूं थारी मायड़ रोई सगो नी वीयो तो म्हारो कई सगो वे सके। छोरी वठा सूं वीर वेई गी अर रोता थकां मोट्यार ने जणा सूण्यो, धुतकारवां लागा। आज आ वात हांची है के पूत कपूत वेई सके, पण माता कदेई कुमाता नी वेवे।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. भारत छोड़ो आदोलन की कौनसी बर्षगांठ 8 अगस्त 2020 को मनाई गई?
2. कोविड-19 महामारी के संक्रमण से बचाव के लिए मास्क पहनने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक मास्क, अनेक जिन्दगी का शुभारम्भ किस प्रदेश ने किया है?
3. रिजर्व बैंक ने एचडीएफसी बैंक के अगले मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) के रूप में किसकी नियुक्ति की है?
4. राष्ट्रपदति रामनाथ कोबिद द्वारा पूर्व केंद्रीय मंत्री मनोज सिन्हा को हाल ही में कहां का उपराज्यपाल नियुक्त किया गया है?
5. भारत के नवनियुक्त नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कौन है?
6. जम्मू कश्मीर के पूर्व उप राज्यपाल का नाम बताइए?
7. केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने रोजगार के लिए एक नए कार्यक्रम खादी अगरबत्ती आत्मनिर्भर मिशन की शुरुआत की है, नितिन गडकरी किस विभाग के मंत्री हैं।
8. संघ लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष किसे बनाया गया है?
9. हाल ही में इंदिरा रसोई योजना का शुभारंभ किस राज्य में किया गया है?
10. संस्कृत भाषा को बल देने के लिए देववाणी ऐप किस राज्य ने लॉंच किया है?
11. हाल ही में किस मशहूर क्रिकेट खिलाड़ी एवं भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान ने खेल से संन्यास लिया है?
12. हाल ही में किस मशहूर क्रिकेटर, twenty-twenty व आईपीएल के विशेषज्ञ बल्लेबाज ने खेल से संन्यास लिया है?
13. रूस ने हाल ही में किस देश को S-400 मिसाइल प्रतिरक्षा प्रणाली की आपूर्ति को रोक दिया है?
14. हाल ही में सिंगापुर इलाज करा रहे पूर्व सपा नेता अमरसिंह का निधन हुआ है। वह वर्तमान में किस सदन के सदस्य थे?
15. तीन राजधानियों का अनुमोदन करने वाले भारत के राज्य का नाम बताइए?

उत्तरमाला

(1) 78 वीं (2) मध्यप्रदेश ने
(3) शशिधर जगदीशन की (4) जम्मू एवं कश्मीर का
(5) जगदीश चंद्र मुर्मू (6) जगदीश चंद्र मुर्मू
(7) MSME (सूक्ष्मए लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय)
(8) प्रदीप कुमार जोशी (9) राजस्थान में
(10) राजस्थान (11) महेंद्र सिंह धोनी ने
(12) सुरेश रैना ने (13) चीन को
(14) राज्यसभा के (15) आंध्रप्रदेश

दिल का राजा रमेश सेन

मैंने कई अमीरों को देखा है, लेकिन वह अपने आप में बहुत ही गरीब थे, मगर आज मैंने एक ऐसे गरीब को देखा जो सचमुच का अमीर निकला। साधारण सा और अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी, बेतरतीब बाल, मेले कुचले फुटे कपड़े, नंगे पैर और अपनी कांख में एक प्लास्टिक का झोला दबाएं एक शख्स सुबह 6 बजे राजनगर बस स्टैंड से हाथ में दूध की थैली और अच्छे ब्रांड के बिस्किट लेकर बेजुबान शावकों के साथ एक पिता की भांति उन्हें प्यार से पुकारता हुआ मुझे नजर आया। उसके इर्द- गिर्द उस वक्त सात, आठ शावको ने उसे घेर लिया। दूध की थैली को खोलकर उसने उसके पास रखें, मिट्टी के कुल्हड़ को बड़े सलीके से रोड पर ही जमा दिए और उसमें दूध भर दिया। शावक दूध पीने लगे, फिर उसने दो बिस्किट के पैकेट खोलें और शावको के सामने रख दिए। सभी शावक बहुत ही इत्मीनान से बिस्किट खाने लगे, उस वक्त वह किसी बादशाह से कम नजर नहीं आ रहा था। उसके चेहरे का तेज किसी पहुंचे हुए संत के समान था। एक उन्मुक्त हंसी उसके चेहरे पर दौड़ रही थी। उसे देखकर लग रहा था कि यह इंसान यह सब करते हुए काफी आनंद के पलों को जी रहा है, यह सब दृश्य मैं अपनी आंखों से देख रहा था।

मेरी जिज्ञासा उसके बारे में और भी जानने के लिए बढ़ने लगी, लेकिन थोड़ा डर मुझे भी लग रहा था। कहीं यह मुझे कुछ कह नहीं दे। कई दिनों तक मैं यह सब कुछ देखता रहा, एक रोज मैंने हिम्मत करके उनसे कहा। क्या मैं आपका फोटो ले सकता हूं, तो उन्होंने बहुत ही सरल लहजे में कहा क्यों नहीं, मैंने अपना कैमरा निकाला और उनकी फोटो लेने लग गया। फिर मैंने उनसे बात करनी चाही, तो उन्होंने कहा आज मुझे देर हो रही हैं। मुझे राजनगर जाना है और रात भी बहुत हो गई है, बीच रास्ते में कुछ असामाजिक तत्व मुझे परेशान करते हैं, तो मैंने उनसे कहा क्या कल मुझे थोड़ा वक्त दोगे, तो उन्होंने कहा हां मैं कल मिलता हूं और वह शख्स अपनी धुन में अपने घर की ओर निकल पडता है।

दूसरे दिन रात को 10 बजे से मैं उसका इंतजार सेठ भगवान दास मार्केट के बाहर करने लगा, थोड़ी देर इंतजार करने के बाद मुझे लगा। आज वह नहीं आएगा, लेकिन 10.30 बजे मुझे वह दूर से ही दिखाई देने लगा। मेरे चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आने लगी। मैंने उसको आवाज लगाई, वह रुक गए। मैं उनसे कुछ पूछने लगा तो उन्होंने कहा मुझे आगे जाना है और कुछ कुत्तों को दूध भी पिलाना है,

उस वक्त उसके आसपास तीन शावक दूध की आस में शायद उनसे कुछ कह रहे थे। मैं उनकी मौन भाषा समझ रहा था। मैंने कहा आप इन्हें यहीं दूध पिला दीजिए। उन्होंने अपना झोला वही रखा और मिट्टी के कुल्हड़ जमा कर उसमें दूध भरने लग गया।

इसी बीच मैं उनसे बात भी करने लगा। सबसे पहले मैंने उनका नाम पूछा तो उन्होंने कहा **दिल का राजा रमेश कुमार,** पिता स्वर्गीय भैरवलालजी सेन, माता भंवरीबाई, निवासी राजनगर (राजसमंद) उम्र 54 वर्ष। मैंने कहा पढ़ाई कितने तक की, तो उन्होंने कहा ज्यादा नहीं छठी कक्षा तक ही मैं पढ़ पाया। मेरे दो भाई है और दो बहने है। मैं अपने मां- बाप की तीसरे नंबर की संतान हूं।

मैं सुबह अपने घर से 6 बजे निकल पड़ता हूं। सर्दी, गर्मी, बारिश 12 महीनों में इन बेजुबान जानवरों, गाय, बछड़ों की सेवा करता हूं। इन्हें चारा खिलाता हूं। कुत्तों को दूध पिलाता हूं। बिस्किट खिलाता हूं। ऐसा करने में मुझे काफी आनंद मिलता है। मुझे संतोष की अनुभूति होती है, यह कार्य मैं 13 वर्षों से निरंतर कर रहा हूं। रोजाना 300 रुपए का खर्च इसमें हो जाता है, राजनगर से कांकरोली की अंतिम सीमा तक सुबह 6 बजे से रात 11 बजे तक इसी कार्य में लगा रहता हूं। रास्ते में कई लोग मुझे चाय- नाश्ता भी करा देते हैं, कुछ लोग मुझे पैसे भी देते हैं, जिससे मैं यह सब कुछ कर पाता हूं। लेकिन मैंने कभी भी किसी से आज तक कोई मांग नहीं की। फटे मैले कुचले कपड़े, नंगे पैर, बेतरतीब बाल, बढ़ी हुई दाढ़ी देखकर मैंने उनसे सवाल किए। क्या आपको ऐसे रहना अच्छा लगता है? तो उन्होंने कहा नहीं, फिर मैंने उनसे कहा आखिर क्या कारण है? तो उन्होंने हंसते हुए कहा फिर कभी बताऊंगा। ऐसा नहीं कि मैं शुरू से ही ऐसा हूं। मैं राधा कृष्ण का भक्त हूं, माताजी का उपासक हूं। मैं हर नवरात्रि में गरबा का आयोजन भी करवाता था। उसका दर्द छलक कर बाहर आना चाहता था, लेकिन उसने अपने होंठ सी लिए। मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन वह निरुत्तर होकर एक ही जवाब दे रहा था कि बस अब मुझे जाना है, फिर कभी मिलते हैं।

उसकी मां आज भी उसके लिए खाना बनाती है, उसे खिलाती है। भाई भी उससे काफी सहज रहते हैं, लेकिन मेरे मन को कई सवाल बार- बार परेशान किए जा रहे थे कि इतना अच्छा इंसान जो बेजुबान जानवरों के लिए फरिश्ता बनकर इन रास्तों पर कई किलोमीटर पैदल घूम रहा है। आखिर उसके लिए कौन फरिश्ता बनकर आएगा? आखिर कौन इस दुनिया में उसके दर्द को समझेगा? उसने मोह, माया, लोभ, लालच को त्याग कर जो रास्ता चुना है, उसके

पीछे की कहानी को आखिर कौन बताएगा? क्योंकि उससे मिलकर बात करके यही जाना कि हां मैं इन जीवो की सेवा कर रहा हूं। यह मुझे बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मैं ऐसे जो रह रहा हूं, जी रहा हूं, यह मुझे भी अच्छा नहीं लगता। उसके बहुत कम शब्द मुझे अंदर तक झकझोर गए। क्योंकि वह अपने भीतर एक बहुत बड़ा सैलाब लेकर निरंतर चल रहा है, उन पगडंडियों पर जहां पर उसे समझने वाला कोई नहीं है। मैंने उसे समझने की काफी कोशिश की और मुझे उनसे मिलकर बात करना काफी अच्छा भी लगा। क्योंकि ऐसे लोगों से बात करने वाले बहुत ही कम लोग होते हैं।

बस में आपसे अंत में यही कहना चाहूंगा कि आपके जीवन में भी कभी कोई ऐसा व्यक्ति नजर आए तो कोशिश करना उसके पास जाने की। उसे प्यार से बात करने की, उसका हालचाल पूछने की। उसे जानने की, क्या पता आपका इतना करना ही उसकी दुनिया बदल कर रख दे। क्योंकि वह भी चाहता है, उससे कोई प्यार करें, उसे समझे। उससे बात करें, क्या पता न जाने जिस ईश्वर की खोज में तुम यहां- वहां भटक रहे हो, वही आपके सामने किस रूप में रोज निकल रहा हो। राजसमंद की इस प्यारी सी गुमनाम शख्सियत रमेश कुमार सेन उर्फ दिल का राजा को मैं दिल से सलाम करता हूं।

राहुल दीक्षित RD
लेखक व साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 94610-16726

एक घटना से तनसुख-नरेंद्र का हृदय परिवर्तन और करने लगे करोड़ों दान

सनातन धर्म के अनुसार प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही तीन ऋण के साथ पैदा होता है– पितृ ऋण, ऋषि ऋण व देव ऋण। पितृ ऋण का अर्थ है, जिस प्रकार हमारे माता पिता ने कष्ट सहन कर हमें बडा किया है। उसी प्रकार हमें भी अपनी संतान का पालन पोषण करना चाहिए। साथ ही अपने माता पिता की वृद्धावस्था में सेवा कर हम पितृ ऋण से मुक्त हो सकते हैं। दूसरा ऋण है ऋण। इसे गुरु ऋण भी कहते हैं। अपने गुरु के प्रति श्रद्धा भाव रखकर हम गुरु से विद्या अध्ययन कर जीवन से मुक्त होते हैं। इस गुरु ऋण से मुक्त होने के लिए अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान को पुन: योग्य शिष्य को दान करनी चाहिए।

तीसरा ऋण देव ऋण है, इस ऋण का अर्थ है, इस संसार में धर्मयुक्त आचरण करना और अपनी श्रद्धानुसार दान पुण्य करते रहना चाहिए। संसार में कई अमीरों के पास अथाह धन संपदा है, मगर अथाह संपदा भी उन्हें संतोष नहीं दे सकती है। संतोष मनुष्य को आत्मिक सुख की प्राप्ति से मिलता है। प्रत्येक इन्सान के भीतर आत्म तत्व होता है और इसी आत्मिक रिश्ते से सभी मनुष्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए जब तक आपके पड़ोस में कोई भूखा हैं, तब तक आप अपने घर पर पांच पकवान खाकर भी संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। सभी प्राणी मात्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। परमात्मा ने हमें अगर इस योग्य बनाया है कि दूसरों की मदद कर सकते हैं, तो हमें अवश्य करनी चाहिए। दीन दुरूखी की सेवा कर उनकी आत्मा को तृप्त करने से ही हमें आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

कुछ इसी ध्येय के साथ राजसमंद के **केलवा निवासी तनसुख बोहरा न उनके भाई नरेंद्र बोहरा** ने अपने जीवन में मानव सेवा को ही सर्वोपरि मान लिया है।

राजसमन्द जिले के केलवा गांव में स्वण् भैरूलाल व फूलीबाई बोहरा के पुत्र तनसुख व नरेन्द्र बोहरा ने जन सेवा को ध्येय बना दिया है। केलवा कस्बे में जनसेवा से जुड़े प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहकर आपने सच्चे अर्थों में जीवन की सार्थकता सिद्ध की है। सिर्फ केलवा ही नहीं, बल्कि आपकी सेवाएं संपूर्ण राजसमन्द जिले के कई गांवों में मिल रही है।

तनसुख बोहरा बताते हैं कि पहले उनके पिता ब्याज पर रुपए देने का कार्य करते हैं और क्षेत्र के लोगों की जमीन रहन रखने का ही मुख्य व्यवसाय था।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2008 में एक ही दिन परिवार में तीन घटनाएं घटित हुई, जिसने इनके जीवन के उद्देश्य को ही बदल कर रख दिया।

पहली घटना यह हुई कि इनके घर आयकर की रेड पड़ी, एक तरफ आयकर के अधिकारी अपनी कार्रवाही कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफइनकी **दादी मोहनबाई** ने अन्न जल त्याग कर **संथारा** ले लिया। इन दोनों घटनाओं से पूरा परिवार स्तब्ध रह गया। फिर तीसरी घटना इनके पिता **स्व. भैरूलालजी व इन दोनों भाइयों के हृदय परिवर्तन की हुई।** इनके पिता भैरूलालजी ने अपने दोनों बेटो को साथ बिठा कर जीवन में अर्थोपार्जन के साथ ही मानवता को सर्वोपरि मानकर जनसेवा में दान के महत्त्व को स्वीकार किया।

उसी दिन यह निर्णय लिया कि अपनी आय का एक निश्चित भाग सदैव जनसेवा में दान करते रहेंगे। स्व. भैरूलालजी की प्रेरणा से तनसुख व उनके भाई नरेंद्र बोहरा आज भी जनसेवा के किसी भी मौके को नहीं चूकते हैं। यही वजह है कि केलवा क्षेत्र में किसी भी जन सेवा के कार्य में सबसे पहले इन्हीं का नाम लिया जाता है।

इसके बाद इनके जीवन में नया मोड़ आया और उनका मुख्य ध्येय ही समाजसेवा बन गया। फिर आहत को राहत देने लगे। गरीब और जरूरतमंद लोगों को पढ़ाने, गंभीर बीमारियों का इलाज कराने के कई अनुकरणीय कार्य किए, लेकिन दिखावे से हमेशा बचते रहे। यहां तक कि वे के घर में भी दान के बारे में कभी कुछ नहीं बताते। फिर वर्ष 2011 में 9 फरवरी 2011 को केलवा में राधाकृष्ण जल मंदिर का निर्माण करवाया, जो आज भी विद्यमान है और उसका नियमित संचालन व रख रखाव इन्हीं के परिवार द्वारा किया जा रहा है।

24 फरवरी 2013 को भैरूलाल बोहरा का निधन हो गया, लेकिन समाजसेवा को लेकर उपयुक्त अस्पताल, स्कूल व श्मशान की अधूरी ख्वाहिशों को उनके बेटे तनसुख व नरेंद्र ने पूरा कर दिखाया। सर्वसुविधायुक्त श्मशान घाट बनाने की उनकी कल्पना को साकार कर 16 अक्टूबर 2016 को लोकार्पण किया गया। यह राजसमंद जिले का अत्याधुनिक श्मशान घाट है, जहां छाया, पानी, शौचालय, स्नानघर तक अत्याधुनिक सुविधाएं विकसित की गई।

उसके बाद तनसुख व नरेंद्र बोहरा ने राजस्थान सरकार की जनसहभागिता योजना के तहत 2 करोड़ की लागत से केलवा में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के लिए नया भवन और एक करोड़ रुपए की लागत से कन्या विद्यालय का निर्माण करवाया। स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र का भवन और उसमें मौजूद सुविधाएं बड़े शहर के स्कूल व अस्पताल को टक्कर देते हैं। इनकी मां फूलीदेवी बोहरा भी हमेशा समाजसेवी के कार्य को लेकर अग्रणी है।

मार्बल माइंस व गैंगसा का कारोबार करने वाले तनसुख बोहरा जिला मार्बल माइंस एवं ऑनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे। इसके अलावा केलवा व राजसमंद की कई स्वयंसेवी संगठनों से भी जुड़े हुए हैं। केलवा के माध्यमिक विद्यालय के भवन में योगदान के लिए राज्य सरकार द्वारा भामाशाह सम्मान के लिए चयन किया, मगर सम्मान की कभी लालसा नहीं रही, जिसके चलते वे जयपुर में भामाशाह सम्मान लेने तक भी नहीं गए।

इसी तरह नरेंद्र बोहरा द्वारा ग्रामवासियों के साथ मिलकर केलवा में नवलश्याम श्रीकृष्ण गोशाला विकसित की जा रही है। इस पर ग्रामवासियों ने गोशाला समिति के अध्यक्ष नरेंद्र बोहरा को ही चुनाए जो अपने व्यवसाय के साथ प्रतिदिन गोसेवा और गोशाला के उत्थान के कार्य में गांव के अन्य लोगों के साथ जुटे हुए हैं। इनका इस गोशाला को क्षेत्र उत्कृष्ट गोशाला बनाने का ध्येय है।

जयवर्द्धन के स्टार ऑफ राजसमंद के तहत तनसुख व नरेंद्र बोहरा को चुना गया है। इनके द्वारा किए गए मानव कल्याण के कार्यों से आमजन को भी सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

ढाई अक्षर

ढाई अक्षर का वक्र,
और ढाई अक्षर का तुंड।
ढाई अक्षर की रिद्धि,
और ढाई अक्षर की सिद्धि।
ढाई अक्षर का शंभू,
और ढाई अक्षर की सत्ति

ढाई अक्षर का ब्रम्हा
और ढाई अक्षर की सृष्टि।
ढाई अक्षर का विष्णु
और ढाई अक्षर की लक्ष्मी
ढाई अक्षर का कृष्ण
और ढाई अक्षर की कांता।
(राधा रानी का दूसरा नाम)

ढाई अक्षर की दुर्गा
और ढाई अक्षर की शक्ति
ढाई अक्षर की श्रद्धा
और ढाई अक्षर की भक्ति
ढाई अक्षर का त्याग
और ढाई अक्षर का ध्यान।

ढाई अक्षर की तृप्ति
और ढाई अक्षर की तृष्णा।
ढाई अक्षर का धर्म
और ढाई अक्षर का कर्म
ढाई अक्षर का भाग्य
और ढाई अक्षर की व्यथा।

ढाई अक्षर का ग्रन्थ,
और ढाई अक्षर का संत।
ढाई अक्षर का शब्द
और ढाई अक्षर का अर्थ।
ढाई अक्षर का सत्य
और ढाई अक्षर का मिथ्या।

ढाई अक्षर की श्रुति
और ढाई अक्षर की ध्वनि।
ढाई अक्षर की अग्नि
और ढाई अक्षर का कुंड

ढाई अक्षर का मंत्र
और ढाई अक्षर का यंत्र।

ढाई अक्षर की सांस
और ढाई अक्षर के प्राण
ढाई अक्षर का जन्म
ढाई अक्षर की मृत्यु
ढाई अक्षर की अस्थि
और ढाई अक्षर की अर्थी

ढाई अक्षर का प्यार
और ढाई अक्षर का स्वार्थ।
ढाई अक्षर का मित्र
और ढाई अक्षर का शत्रु
ढाई अक्षर का प्रेम
और ढाई अक्षर की घृणा।

जन्म से लेकर मृत्यु तक
हम बंधे हैं ढाई अक्षर में।
हैं ढाई अक्षर ही वक्त में,
और ढाई अक्षर ही अंत में।
समझ ना पाया कोई भी
है रहस्य क्या ढाई अक्षर
में।

ऋतुराज दवे
साहित्यकार, कांकरोली
मो. 97850-60945

स्वदेशी अपनाएंगे

जब देश में कोरोना महामारी बनकर छाया था
और प्रधानमंत्रीजी ने देश में जब लॉकडाउन लगाया था
स्वेगी, मजेटो, मेकडॉनाल्ड, उबरईट और पिज्जा हट
अमेजन, फ्लिप कार्ट, के.एफ.सी. और ऑनलाइन वाले
इनमें से कोई हमारी मदद करने आगे नहीं आया था
अब खुद सोचो और बतलाओ कौन हमारे काम आया था
मुसीबतों के इस दौर में दूध, सब्जी, राशन पानी
हम तक पहुंचाने कौन जान पे खेलकर लाया था।
झूठी शान दिखलाने के खातिर उस लोकल को नहीं पूछते थे
याद आया! उस वक्त काम तो हमारे वहीं लोकल वाला आया था
पार्थ ने किया है आह्वान, देश को हमें आत्मनिर्भर बनाना है
इसलिए हम लेते हैं शपथ, विदेशी सामान काम में नहीं लेना है
विदेशी सामान का बहिष्कार करेंगे, औरों को भी समझाएंगे
ऑनलाइन से सामान मंगाना छोडेंगे और स्वदेशी को अपनाएंगे
देश होगा तभी आत्मनिर्भर, अगर लोकल व्यापारी का साथ निभाएंगें
देश का पैसा रहेगा देश में
किसान, मजदूर, व्यापारी धन धान्य से पूर्ण हो जाएंगें
अगर कोई गद्दारी नहीं करेगा और नहीं रोयेगा विदेशी का रोना
पुरुषोत्तम का है यह कहना के सच हो जाएगा मोदीजी का सपना।

पुरुषोत्तम शाकद्वीपी
उदयपुर, राजस्थान
मो. 96490-92060

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए
3 वर्ष	36	720	220	500 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

दुष्टों को न दें आश्रय- प्रश्रय

जब से समाज में अच्छे बुरे के मूल्यांकन की दृष्टि प्रदूषित हो गई है, तभी से बुराइयों और बुरे लोगों को प्रोत्साहन, आदर-सम्मान और श्रद्धा प्राप्त होने लगी है और लोग भी अपने निम्नतर स्वार्थों और दैहिक भोग विलास तथा दिखावों के लिए लुच्चों टुच्चों के आगे सर झुकाने लगे हैं, उन्हें रहनुमा और भगवान मानने और मनवाने लगे हैं। इसी मनोवृत्ति का खामियाजा आज समाज भुगत रहा है, जहां कि सच्चे, अच्छे, सज्जनों को हाशिये पर धकेल दिया गया है और उनका स्थान ले लिया है गुण्डे, बदमाशों और लोफरों- उचक्कों ने।

समाज की दुर्दशाग्रस्त स्थिति यह है कि अच्छे को सार्वजनीन रूप से अच्छा कहने की उदारता नहीं है और बुरे को एकान्त में भी बुरा कह डालने का हमारा साहस नहीं है। सज्जन असंगठित हैं और दुर्जन संगठित। यही कारण है कि असामाजिकता, अपराध और भय का माहौल दिखने लगा है।

हममें से तकरीबन सारे लोग चिल्लपों मचाते हैं कि जमाना खराब होता जा रहा है, भय और असुरक्षा का माहौल देखा जा रहा है और अशान्ति तथा आशंकाओं से जनजीवन घिरता जा रहा है, लेकिन हममें से किसी को सच कह पाने का साहस नहीं है कि आज जो कुछ दिख रहा है, उसके लिए केवल और केवल हम लोग ही जिम्मेदार हैं। जिनके नीच स्वार्थों और लोभ लालच की वजह से आज माहौल खराब दिखने लगा है।

हम सारे लोग महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा की बात करते हैं, लेकिन हममें से कितने लोग हैं, जो सत्य और अहिंसा को जीवन में अपनाते हैं? इस प्रश्न पर हम सारे निरुत्तर हैं। क्योंकि हम सब झूठे, दोषी और पापी हैं और हमारे भीतर असत्य, हिंसा और व्यभिचारी स्वभाव के पापों का स्थूल प्रकटीकरण हमारे सामने हो रहा है। इसलिए औरों पर दोष मढ़ने की बजाय सबसे पहला कर्तव्य यही है कि हम अपने आपको देखें और निर्णय लें।

वर्तमान समय की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि सब कुछ ज्ञान और अनुभव लुटा दिए जाने के बाद पता चलता है कि जो कुछ हुआ, वह गलत हुआ है। इस मामले में पछतावे के सिवा कोई दूसरा रास्ता शेष नहीं बचता।

अधिसंख्य लोग लेने ही लेने वाले हैं और ऐसे में लोग हर प्रकार के स्वांग रचकर, झूठ और फरेब का मायाजाल अपना कर तथा हर तरह के गोरखधंधे और हथकण्डे अपनाकर भी वह सब कुछ हासिल कर लेना चाहते हैं, जो कि सामान्य और स्वाभाविक तौर पर हासिल नहीं हो सकता।

अपने काम निकलवाने और स्वार्थ को पूरा करने के लिए लोग आज किसी भी हद तक जा सकते हैं। अपने मामूली कामों के लिए लोग दूसरों का चाहे जितना नुकसान कर देने की मानसिकता से भरे हुए हैं और इसी का नतीजा है कि आजकल आदमियों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद आदमी का आदमी पर भरोसा नहीं है।

हर तरफ विश्वासहीनता का माहौल है। आज का सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यही है कि भरोसा करें तो आखिर किस पर। कई बार लगता है कि कोई भरोसेमंद रहा ही नहीं, जिसे अपना माना जा सके। आदमी किधर भी जा सकता है, पाला बदल सकता है, बशर्ते कि उसका कोई उल्लू सीधा हो रहा हो।

धर्म, नैतिकता, सदाचार और ईमानदारी जैसे शब्दों का कोई वजूद नहीं रहा। इन पर स्वार्थ भरी मानसिकता हावी है। मानवता पर चौतरफा हो रहे आत्मघाती हमलों को देखकर आभास यही होता है कि आखिर ऐसा क्या हो गया है कि मानवीय मूल्य कराहने लगे हैं और आदमी अपनी मनोवृत्ति बदलता जा रहा है, उसे पैसा दिखता है या भोगवादी संसाधन। और इन सबके लिए कोई मेहनत तक नहीं करनी पड़े तो कितना अच्छा।

बहुधा देखा यह जा रहा है कि लोग उन्हीं के पर कतरने और पहचान मिटा देने की कोशिश करते हैं, जिनके सहारे वे किसी मुकाम को पा जाते हैं।

एक निर्धारित ऊंचाई और तरक्की या लोकप्रियता की मुख्यधारा का स्वाद चख लिए जाने के बाद आदमी अपने आपे से बाहर हो ही जाता है और ऐसा कुछ करना शुरू कर देता है जो किसी के लिए अच्छा नहीं होता।

आदमी कितना ही अच्छा होने का दम भरे, मगर किसी सांचे में ढल जाने और फ्रेम में फिट हो जाने के बाद उसके भीतर दंभ और बड़प्पन का भाव अपने आप आ ही जाता है। कुछ ही लोग ऐसे होंगे, जिनके लिए यह कहा जा सकता होगा कि पद, प्रतिष्ठा और वैभव पा जाने के बावजूद वे अहंकारमुक्त, सरल और सहज हैं। अन्यथा अधिकांश लोग अपने आपको भगवान समझने लगते हैं और उसी के अनुरूप व्यवहार करते हुए यह समझते हैं कि पूरी दुनिया उनकी सेवा चाकरी के लिए ही पैदा हुई है और इन लोगों से हर प्रकार की सेवा पाना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है और सेवा पाकर वे औरों के प्रति उपकार ही कर रहे हैं। इसी के साथ काफी लोग यह अनुभव भी करते हैं कि उनके बनाए पढ़ाये और आगे बढ़ाए हुए लोग बाद में चलकर जाने किन दुर्गुणों में रम जाते हैं और भस्मासुर जैसा व्यवहार करने लग जाते हैं। इस प्रकार के कृतघ्न लोगों की तादाद आजकल सभी स्थानों पर बढ़ती ही जा रही है, जो काम निकल जाने के बाद न किसी को इज्जत देते हैं और न ही अहसान मानते हैं।

यह बात घर परिवार, समाज और क्षेत्र से लेकर हर तरफ सौ फीसदी सच्चाई के साथ लागू होती है। हर कृतघ्न इंसान की सोच ही इतनी बिगड़ जाती है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। ये लोग हमेशा यही सोचते समझते और कहते हैं कि लोगों ने जो कुछ किया वह उनका कर्त्तव्य था, इसमें क्या कुछ नया किया। अपने कर्तव्य से जी चुराने वाले लोग आज दूसरों को कर्त्तव्य की दुहाई देते हैं। इससे बड़ा और घोर आश्चर्य इस कलियुग में और कुछ नहीं हो सकता।

प्रबुद्धजनों को अपनी जिन्दगी में इस बात का मलाल हमेशा सताए रखता है कि जिन लोगों को उन्होंने ज्ञान और हुनर दिया होता है, वे ही उनके सामने हो जाते हैं। आदर सम्मान की बात तो दूर की है, ये लोग परम शत्रुओं जैसा व्यवहार करने लगते हैं और सीधे शब्दों में कहा जाए तो आजकल भस्मासुरों की संख्या हर क्षेत्र में बढ़ती जा रही है, जो उन्हीं को लील जाने को तैयार हैं, जो उनके लिए मार्गदर्शक या संरक्षक की भूमिका में होते हैं।

सामाजिकता के साथ यह भयावह संकट का दौर है, जिसमें कृतज्ञता के भाव पलायन करते जा रहे हैं और कृतघ्नता का माहौल पसरने लगता है। इस स्थिति के लिए जिम्मेदार भी हम ही हैं, जिन्होंने योग्यता और सभी प्रकार की पात्रता का कोई मानदण्ड अपनाए बिना उन लोगों को ज्ञान या हुनर दे डाला है, जो उसके योग्य नहीं थे।

चाहे यह शिक्षा- दीक्षा किसी लोभ- लालच, प्रलोभन या मोह से ग्रस्त होकर ही क्यों न दी गई हो, गलती हमारी भी रही है कि हमने पात्रता का परीक्षण किए बगैर निष्कपट और उदात्त भाव से सब कुछ लुटा दिया।

आम तौर पर सज्जनों में यह कमी होती है कि वे दूसरों को भी अपनी तरह ही सज्जन, शालीन और उदार मानते हैं, जबकि हकीकत में ऐसा नहीं होता। लोग हमारी सज्जनता को भुनाने के लिए खुद भी सज्जनता का लबादा ओढ़कर अभिनयी विनम्रता के साथ हमारे करीब आते हैं और दस्यु वृत्ति का इस्तेमाल कर वह सब कुछ हमसे छीन ले जाते हैं, जो उन्हें अपेक्षित होता है।

हमारे भोलेपन और सज्जनता का हर प्रकार से इस्तेमाल कर डालने की कला में माहिर लोगों की आजकल कहीं कोई कमी नहीं है। हर सज्जन इंसान ऐसे सैकड़ों लोगों से घिरा हुआ है, जो कुछ न कुछ पा जाने के लिए आतुर और उतावले हैं और मौके की तलाश में हैं। जहां मौका मिला, वहां डाका डाल दिया और वह भी सम्पूर्ण प्रेम, श्रद्धा और आत्मीयता जताकर।

अभिनय भी ऐसा जीवन्त कि इसकी हकीकत का पता लगे तब भी सालों बाद। इन सभी प्रकार के हालातों का एकमात्र हल यही है कि जो कुछ हुनर या ज्ञान किसी को दें, उससे पहले उसकी असलियत जान लें। यह देख लें कि जिसे दिया जा रहा है वह पात्र है भी या नहीं। पात्रता का परीक्षण किए बगैर जहां जो कुछ होगा, वह आत्मघाती ही होगा। शास्त्रों में अपात्रों को कुछ भी देने पर जबर्दस्त वर्जना लगाते हुए कहा गया है दृ अशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापियान भवति। अर्थात अयोग्य को न दें, यदि मोह से दे भी दिया, तो पाप का भागी होना पड़ेगा। और इस मामले में हम सभी का जिस्म पापों के भार से भरा पड़ा है। दूसरे सारे पापों का तो प्रायश्चित भी हो सकता है, किन्तु हमारे इन पापों का कोई प्रायश्चित नहीं है। क्योंकि हमारा यह पाप एक दो जन्म तक ही जुड़ा हुआ नहीं रहने वाला। आने वाली कई सारी पीढ़ियों को हमारे पापों की सजा और नारकीय यंत्रणाएं भुगतनी पड़ेंगी।

डॉ. दीपक आचार्य
व्यंग्यकार, बांसवाड़ा
मो. 94133-06077

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

तालाब लाते समय पुल का टूट जाना

सुनील जैन 'राही'
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810 960 2885

झम्मन के चैपाल पर आते ही कुछ जल्दी से खिसक गए। झम्मन लोकप्रिय कम अलोकप्रिय ज्यादा थे। अलोकप्रियता की वजह चौतरफा ज्ञान था। विषय कोई सा भी हो, उन्हें टांग अड़ानी है। बाल सफेद हो गए, लेकिन टांग फंसाने की आदत 16 साल के लौंडे की तरह थी। सुबह से बारिश हो रही थी। रुकी तो चैपाल सजने लगी। चौपाल पर रोज आने वाले आ चुके थे। कभी कभार आते, वे नहीं आए। सरकारी अफसर की तरह बारिश में कौन घर से निकले? बारिश में भजन कीर्तन तो होने से रहे। खैर जितने थे, चौपाल के लिए काफी थे।

झम्मन की अलोकप्रियता के बावजूद सम्मान थानेदार का था। उनकी फंसाई टांग निकालने के लिए विधायकी चाल जरूरी थी। विधायक भी झम्मन चाल से घबराते। चुनाव के पहले और चुनाव के बाद विधायक पांव छूने जरूर आता। पांव छूने के पहले और पांव छूने के बाद मन ही मन मानो गालियां देता। बगल वाली कुर्सी बिठाता। भाषण के बीच बीच में काकाजी को देखता। कहीं टांग उठकर अड़ने की तैयारी तो नहीं कर रहे। विधायक आश्वस्त हो कह देते– जो कहना था, कह दिया, अब झम्मन जाने। झम्मन नज़रों से मौन स्वीकृति दे देते।

झम्मन के बैठते ही समस्याएं उठ खड़ी हुईं। बारिश हो रही है, लेकिन गांव में नदी नहीं है। चुनाव से पहले गांव में नदी आनी चाहिए। नदी नहीं आएगी तो नहाने और डूबने के लिए आशापुर जाएंगे क्या? इलाज की सुविधा भले न हो, लेकिन गांव में कम से कम डूबने और मरने की सुविधा तो होनी चाहिए। 15 साल से सांसद जी कह रहे हैं। सतपुड़ा पहाड़ स्कूल के पास खड़ा कर दूंगा। पहाड़ की छांव बच्चे मन से पढ़ेंगे। पहाड़ से क्या लेना–देना, नदी चाहिए। छोरा और छोरियां स्वीमिंग पूल का आनन्द ले सकें? नहाती छोरियों को देखने नर्मदा मैया पे जाना पड़े। छोरा लोग मन छोटा करके रह जाते हैं। नर्मदा मैया को ही ले आओ। सब सुविधा एक साथ, नहाने, डूबने, मरने और खपाने की। गरीब गुरबा भी आसानी से मर लेगा। लकड़ी नहीं मिली तो मैया की गोद में। गाड़ने

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

से धरम परिवर्तन का खतरा। नर्मदा मैया को छोड़ो छोटी मोटी नदी हो। अभी तक झम्मन की टांग, टांग के स्थान पर थी। न उठी ना फंसी। हल्की बूंदा-बांदी आ गई। चौपाल के त्रिपाल में सिकुड़न पैदा होने लगी। झम्मन खड़े हो गए।

विधायक जी को छोड़ो अपन क्या कर सकते हैं? नदी लाना है तो लाना है। नदी और पहाड़ की बात करेंगे? जरा सी बूंदा-बांदी में एक दूसरे में घुसे जा रहे हैं। नदी लाने के लिए कौन-कौन तैयार है? अपने-अपने हाथ उठा दो। चौपाल में घुसुर- पुसुर होने लगी। तू हाथ उठाए पहले तू उठा।

सरपंच का लौंडा पहले हाथ खड़ा करें। फिर सभी हाथ खड़े कर देंगे। सरपंच के लौंडे ने हाथ नहीं खड़ा किया, खुद खड़ा हो गया पिछली बार भी खड़ा हुआ था। बाप- बेटे दोनों लड़ पड़े।

झम्मन, नदी ले आएंगे। बीच में संकरी नाला पड़ेगा, उसका क्या करेंगे? नाले में से तो नदी नहीं आ सकती? नदी को लाने के लिए रोड भी तो ठीक करवाना पड़ेगा। बूंदा-बांदी थम गई। सरपंच का लौंडा बोला- इसमें रोड ठीक कराने की बात कहां से आ टपकी? नदी को ट्रेक्टर ट्राली में भर लाएंगे। काकाजी ने टांग अड़ा दी। पहले यह तय करो नदी कितनी बड़ी होगी? छोटी लाना या है बड़ी? नदी कोई लाड़ी (पत्नी) थोड़े ही है, जो साइकल के कॅरियर पर बांध लाएं?

चौपाल बहसी हो गई। छोटी ठीक रहेगी या बड़ी नदी। छोटी नदी में कितना पानी आएगा? गांव की पूर्ति हो जाएगी क्या? अगर बड़ी नदी लाए तो कहीं गांव न डूब जाए। बड़ी नदी के खतरे ज्यादा हैं? सरपंच के लौंडे ने झम्मन के सामने हाथ नचाते हुए कहा- नदी छोटी ही लाएंगे। चोरी- चकारी का डर हुआ तो घर (रिजार्ट) में कोंड देंगे।

छोटी नदी तय हो गई। संकरी नाले का क्या करना है? पहले उस पर पुल बनाना पड़ेगा! नहीं तो नदी, नाले में डूब जाएगी। जैसे दिल्ली में जमना मैया नालों में डूब गई। पिछली बार तालाब लाते समय संकरी नाले का पुल टूट गया था। पुल बनाने के नाम पर तीन- चार उत्साही लौंडे खड़े हो गए। कहना था- पुल हम बनायेंगे। पिछली बार सरपंच के लौंडे ने पुल बनाया था। उद्‌घाटन से पहले ही नाले में पड़ गया। झम्मन की बात पूरी नहीं हो पाई कि बहस हाथापाई में बदल गई। बारिश तेज हो चुकी थी। पुल बनाने और नदी लाने की योजना खटाई में पड़ गई।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : मशीन इंसानों के समान स्वयं निर्णय लेकर कार्य करती है

वर्तमान शताब्दी में तकनीकी विकास की अधिकांश निर्भरता कम्प्यूट विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है। क्योंकि कम्प्यूटर विज्ञान वर्तमान में एक विषय की सीमाओं से बाहर निकलकर एक टूल और टेक्नोलॉजी बन चुका है, जिसका अनुप्रयोग व उपयोग लगभग सभी क्षेत्रों में त्वरित गति से किया जा रहा है। बड़े से बड़ा कार्य बड़ी कुशलता से सैकंडो में निष्पादित कर लिए जाते हैं।

वर्तमान दौर में कम्प्यूटर वज्ञान से ही उपजी एक शाखा (Artificial Intelligence) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 'कृत्रिम बुद्धिमता' है, जिसका उद्देश्य ऐसी मशीन बनाना है, जो कि मनुष्य के जैसा ही दिमाग रखती हो और उसी के समान और स्वयं से निर्णय लेने की क्षमता रखती हो और यह मशीन स्वयं उचित निर्णय लेकर कार्य को सफलतापूर्वक निष्पादित कर सकें। आर्टिफिशियल इंटलीजेंस/ कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कम्प्यूटर मशीन एक विशेष प्रकार की युक्ति है,

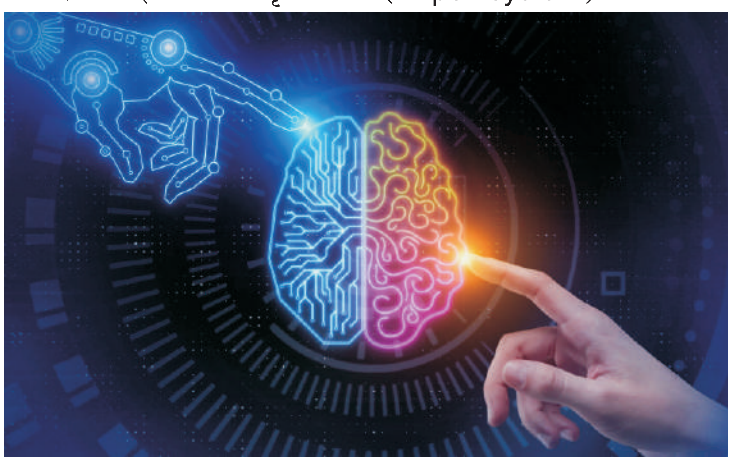

जिसमें मशीन को सॉफ्टवेयर के माध्यम से इंसानी बुद्धिमत्ता प्रदान की जाती है और बिना किसी इंसानी सहायता के इंसानों के समान स्वयं निर्णय लेकर कार्य अग्रेषित करती है। इस प्रक्रिया हेतु मुख्यत: तीन पदों/ संक्रिया/ नियमों का पालन किया जाता है। प्रथम संक्रिया लर्निंग (learning) कहलाती है। जिसके अंतर्गत मशीन में सॉफ्टवेयर के माध्यम से सूचना व निर्देश स्टोर किए जाते हैं। यह विशेष प्रकार की सूचनाएं होती है, जो कि इनपुट व आउटपुट के आधार पर दी गई होती है और इसके संयोजन व सामंजस्य से विभिन्न निर्णय बनाए जा सकते हैं तथा विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को समझा भी जाता है। द्वितीय संक्रिया/ पद में तार्किक (logical/ reasoning) गतिविधियां आती है, जिससे मशीन को निर्देशित किया जाता है कि बनाए गए नियमों का पालन करें, जिससे निश्चित निर्णय को लिया जा सकें। यह पद एप्रोक्सीमेशन (approximation) अनुमानित निर्णय और डिफाइन निश्चित निर्णय को लेने में प्रमुख भूमिका निभाता है और तृतीय संक्रिया पद सेल्फ करेक्शन (self- correction) है, जो कि लर्निंग और तार्किक/ रिजनिंग तर्क को बार बार दोहरा करके वांछित परिणाम व निर्णय प्रदर्शित करते हैं। अर्थात् मशीन पहले देखती है, फिर उसे प्रोसेस या प्रक्रिया बंद करती है और उसका तर्कों के आधार पर मूल्यांकन करके एक निर्णय पर पहुंचती है। इसमें प्रक्रिया को कई बार दोहराया भी जाता है, जिससे सही निर्णय पर पहुंचाया जा सकें। अर्थात् जिस प्रकार इंसानी दिमाग किसी गतिविधि से सीखकर कई निर्णय बनाता है और बार बार सोच विचार करके एक श्रेष्ठ निर्णय पर आता है। ठीक वही प्रक्रिया मशीन भी दोहराती है। अत: हम यह कह सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उद्देश्य ऐसे एक्टसपर्ट सिस्टम (Expert system) का निर्माण करना है, जो बुद्धिमत्ता भरे व्यवहार कर सकें, जिनमें सीखने की क्षमता हो, जो समझ सकें और समझा भी सकें तथा उपयोगकर्ता को उचित सलाह भी प्रदान कर सकें। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह मानव की बुद्धिमत्ता को मशीन की बुद्धिमत्ता में परिवर्तित करना है, जिससे वह मशीन मानव की तरह व्यवहार सोच, समझ व क्रिया कर सकें। यह मशीन भी पहले सॉफ्टवेयर व डाटा के माध्यम से सीखती है तथा दिए गए प्रॉब्लम को पहले समझती है व डाटा के माध्यम से जवाब का डाटा तैयार करती है और उसे लॉजिक/ तर्कों के आधार पर मापित करके श्रेष्ठतम सटीक उत्तर तैयार करती है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को भी श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। यह दो प्रमुख खंडों के अंदर बांटी जा सकती है। इन्हें स्ट्रॉंग (Strong) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और विक (weak) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह दोनों ही आवश्यकता व स्थान के अनुसार प्रयोग में लाए जाते हैं। विक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सामान्य व पूर्व निर्धारित निश्चित प्रकार के कार्यों को संपादित कर पाने में सक्षम होती है। जैसे वर्चुअल पर्सनल असिस्टेंट एप्पलसिरी आदि। जबकि स्ट्रॉंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में विशेष कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीन की क्षमता होती है। यह लगभग मनुष्य की क्षमता के आस पास की क्षमता की हो सकती है तथा मनुष्य के समान भी रन टाइम पर निर्णय लेने की क्षमता रखती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस / कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अगर वृहद (macro) रूप में देखा जाए, तो यह बहुत सारी टेक्नोलॉजी का एक

समन्वय है। यह सभी टेक्नोलॉजी अपने निश्चित कार्य से आपस में जुड़कर एक बड़ी और अनिश्चित समस्या का हल भी निकाल लेती है। इसी के अंतर्गत ऑटोमेशन एक प्रकार की प्रक्रिया या टेक्नोलॉजी कही जा सकती है, जिससे सिस्टम और प्रक्रिया को स्वचालित व स्वनियंत्रित कर दिया जाता है। रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA) एक प्रोग्राम्ड प्रक्रिया है, जो कि हाई वॉल्यूम डाटा के साथ बार बार दोहराए जाने वाले कार्य को आसान तरीके में बदलने का कार्य करता है।

इसी प्रकार मशीन लर्निंग (ML) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की एक ऐसी टेक्नोलॉजी है, जिससे कम्प्यूटर बिना विशेष प्रोग्रामिंग के ही लर्निंग के आधार पर कार्य करता है। यह मुख्यतया चार प्रकार की एल्गोरिथम और व्यवस्थाओं पर आधारित है। प्रथम सुपरवाइज्ड लर्निंग है। इसमें डाटा सेट का पैटर्न होताहै, जिससे आने वाले सभी नए डाटा सेट को लेबल किया जाता है। इसमें इनपुट व इनपुट प्रश्न एवं आउटपुट डाटा का प्रकार लगभग पूर्व निर्धारित होता है। अनसुपरवाइज्ड लर्निंग, इसमें डाटा को लेबल नहीं किया गया होता है, जबकि डाटा स्टे को सोर्ट किया गया होता है। यहां नए डाटा को समानता व असमानता के आधार पर विशिष्ट श्रेणी में रखा जाता है। इसमें रन टाइम पर उपलब्ध डाटा सेट के आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुसार परिणाम प्रस्तुत किया जाता है। सेमी सुपरवाइज्ड लर्निंग, यह सुपरवाइज्ड लर्निंग एवं अनसुपरवाइज्ड लर्निंग दोनों का मिलाजुला स्वरुप है। यह दोनों प्रकार के लर्निंग के माध्यम से कार्य करता है। रिइंफोर्समेंट लर्निंग, इस प्रक्रिया में भी डाटा को लेबल्ड नहीं किया जाता है, लेकिन कुछ विशेष एल्गोरिथम के माध्यम से कुछ गतिविधियों और परिणाम के बाद आर्टिफिशियल एटेंलिजेंस सिस्टम को फीडबैक दिया जाता है। उस फीडबैक के आधार पर उचित निर्णय लिए जाते हैं। यह मशीन लर्निंग का सबसे जटिल भाग है। यह त्वरित गति से नए एल्गोरिथम का प्रयोग करती है तथा यह पूर्व निर्धारित प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होती है। यह दिए गए इनपुट के आधार पर रन टाइम के अंदर ही निर्णय का निर्माण करती है।

डीप लर्निंग (Deep-learning) भी मशीन का गूढ़ भाग है, जिसमें एनालिटिक्स का ऑटोमेशन किया जाता है। यह भी एक प्रकार की जटिल प्रक्रिया है, जो कॉम्प्लेक्स डेटा पर कार्य करके परिणाम को पुष्ट करती है। इसी क्रम में मशीन विजन (Machine Vision) भी विशेष भूमिका रखता है, जिसकी सहायता से कम्पयूटर मनुष्य के समान देखने की क्षमता से लैस हो जाता है, जिसमें कम्प्यूटर विजुअल्स को हाईडेफिनेशनल (HD) कैमरा की सहायता से कैप्चर करने के साथ ही उसका विश्लेषण भी करता है। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि मशीन विजन द्वारा दीवारों के पार भी देखा जा सकता है। अत: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को विशेष दक्षता से युक्त करने में यह टेक्नोलॉजी सक्षम है।

नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) : यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें इंसानी भाषा को मशीन, कम्प्यूटर प्रोग्राम की मदद से समझ सकती है। इसका उदाहरण टेक्स्ट एनालिसिस, ईमेल स्पैम डिटेक्शन, सेंटीमेंट एनालिसिस, टेक्स्ट ट्रांसलेशन, स्पीच रिकॉग्निशन आदि है।

पैटर्न रिकॉग्निशन की सहायता से मशीन लर्निंग में डाटा में पैटर्न को पहचाना जाता है और उन्हें वर्चुअल श्रेणीबद्ध किया जाता है। पैटर्न रिकॉग्निशन का उपयोग मुख्य रूप से डाटा माइनिंग एवं डाटा एनालिटिक्स के लिए किया जाता है। इसी क्रम में रोबोटिक्स भी एक विशेष क्षेत्र है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रमुख से उपयोग में लाया जाता है, जिसमें रोबोट डिजाइन और निर्माण में ज्यादा ध्यान दिया जाता है। रोबोटिक्स के द्वारा वह कठिन कार्य भी किए जाते हैं, जो इंसानी शरीर के द्वारा संभव नहीं हो पाता है। रोबोट बिना गलती किए एवं बिना थके जटिल से जटिल काम भी आसानी से कर लेते हैं। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, शिक्षा, उद्योग, फाइनेंस, निर्माण, ऑटोमोबाइल, व्यवसाय, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में बहुत तेजी से प्रयोग में लाया जा रहा है और मनुष्य मशीनों से मनुष्य के समान कार्य करवा पा रहा है। आज मशीनें रोबोटिक्स व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से मनुष्य के सारे आदेश मानकर दिए आदेश के अनुसार कार्य कर रहे हैं।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर व लेखक
भवानीनगर, कांकरोली
मो. 9784652469

राबड़ी

जिन्दगाणी री गैल अर रेलमपेल म्हे कणीरे तो मजा है अर कण्डेई दन काडणो ई सजा। पईसा वाळा रे तो खावा पीवा री हतरे चीजां घरां म्हे त्यार रेवे। भावो क मती भावो, पचो क भली मती पचो। जबान रा हवाद ऊं खाई खाई न वादी रा फोफस्या परा वणे। छगल्या पारोटी जश्यो ढुमाळियो तोंद रो परो निकले। दूजी आड़ी करसा अर मजूर खरो कमावे न खोटो खावे, वणारा गाल्या बैठ्या थका न पेट पिचकियो थकोईज निजरे आवे। पईसा वाळा आपणा टाबरा ने चमचमात पेंकिंग री चीजां देवड़ावे। मजूर अर करसा रे राबड़ी रो पातो मोट्यार ऊं लगाईन बूढ़ा तक हगला ने तरपत करें।

दाल, हाणो, तरकारी वणावा में तेल, मसालो चावै। राबड़ी में तेल चावै न मरचा, घी चावै न काई दूसरो आइटम। हलद लागे न फटकरी, रंग आवे चौखो। मक्की रा दलिया अर छा रा मेलऊं चूल्ला पै राबड़ी घणी हाऊ वणे। करसा रे पामणो पोई आवे तो राबड़ी अर रोटो परो जीमावे। अंगरेजीचा में तो दूद चा पत्ती, खांड चावै। अतरा पया भगवान हरुपिया किसान अर मजूर कने कठे व्हे। पण धनवान वणा लिछमिया ने है, जो राबड़ीऊं आया ग्या रो ढाब्यो ढाब राखे। दोझो नी व्हे वो पाड़ोस में जठे छा फरे वठऊं कलसी भरीन छा लावे अर राबड़ी रांधे। गामड़ा में छा कोई वेचे नी। या तो सेरा मेइज मोल वके। आपसी मेल मिलाप रो हांचो उदाहरण मनखचारो गामड़ा गाम, भागल, ढाणियां में देखवा ने मले।

साग वणावा में हतरे तेवन करना पड़े। चीजां बाजार ऊं पया हाटे मोलावणी पड़े। खेतां पाली पै रेवा वाळा रे तो हाजर में हुजर नी अर गेर री तलास नी रो नेम धरम रेवे। खेत में हरू, बथवा री भाजी बाफ न लूण, मरच मलाईन रांधी दे। लील मरच हाते लागे तो रोटा रे बटका हाते अर कदी हाऊ जोगवाई व्हे तो घी गोल रो हाणो न दूजो छाती बालणो होच न बाटी परी खावे। कान्दो तो अतरो भावे क केणावत वणगी के- मजूर- करसो खावे काई कान्दो अर हान्दो। टेटा, बाकरा, गारा, हांडा (ऊंट) चरावा वाळा बी हिरामण रे वातरे राबड़ी लेईन गेले व्हे। सेरा में व्हेवा वाळा बोफा डीनर में बी राबड़ी रा काउंटर लागवा लाग्या है। जठे जबरी भीड़ पड़े। राबड़ी पीदा पछेईज रंजणो आवे। सेर में छा तो पेंकिंग में मलवा लागी है। वो दन दूरो नी जदी राबड़ी बी चमचमाट पेंकिंग में आवेगा। केणावत सोले आना हांची लागेला- राबड़ी रेई दांत आया।

नगेन्द्र कुमार मेहता
शिक्षाविद् व साहित्यकार
तेलियो का तालाब नाथद्वारा
मो. 98299-60055

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी
होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन
मो. 9214384205 9602997715
जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन
NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

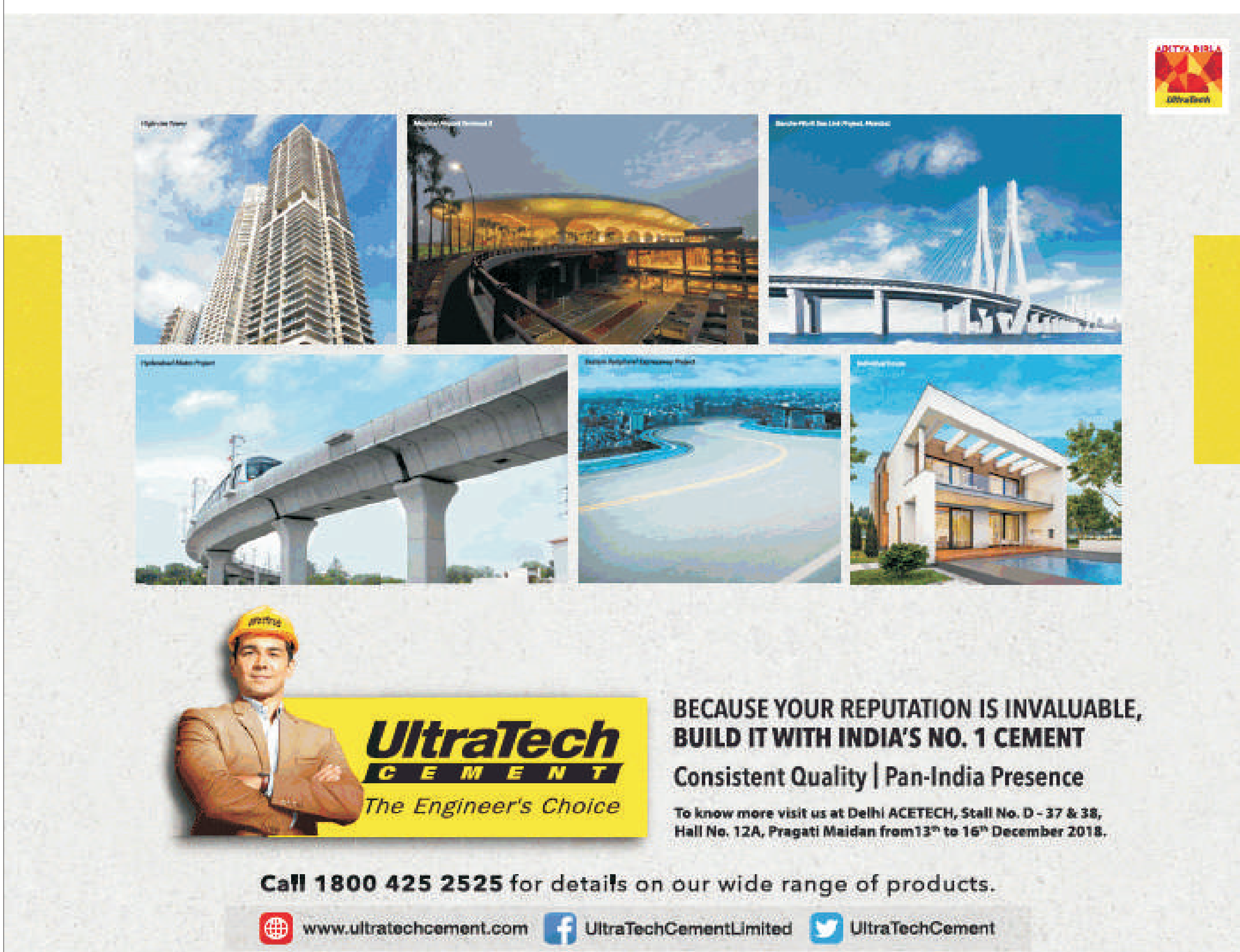
UltraTech
CEMENT
The Engineer's Choice
BECAUSE YOUR REPUTATION IS INVALUABLE,
BUILD IT WITH INDIA'S NO. 1 CEMENT
Consistent Quality | Pan-India Presence
To know more visit us at Delhi ACETECH, Stall No. D - 37 & 38,
Hall No. 12A, Pragati Maidan from13th to 16th December 2018.
Call 1800 425 2525 for details on our wide range of products.
www.ultratechcement.com
UltraTechCementLimited
UltraTechCement

"SHREE"

Tension Showroom

MFG. & WHOLESALER OF JEANS, COTTON TROUSER, SHIRTS, T-SHIRT & LOWER

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते है, हम सस्ता देते है...

ब्राण्डेड शर्ट
1 पीस
₹299

ब्राण्डेड जीन्स
1 पीस
₹499

टेंशन के कपड़े लेकर हो जाइए नो टेंशन

M. 8769955630, 7230059101

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास, 100 फीट रोड़, राजसमन्द (राज.)

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9672980901
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To